

• वर्ष ६५ • अंक ६ • मूल्य ₹२०

मार्च (द्वितीय) २०२३



पाक्षिक परोपकारिणी



महर्षि दयानन्द सरस्वती

ब्रह्मचारी रामानन्द के साथ

परोपकारिणी सभा स्थापना दिवस (२७ फरवरी) पर आयोजित यज्ञ-प्रवचन के दृश्य



कार्यक्रम में उपस्थित परोपकारिणी सभा के पदाधिकारी, सदस्य एवं सभा से जुड़े महानुभाव



महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र



विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः॥

वर्ष : ६५ अंक : ०६

दयानन्दाब्द : १९८

विक्रम संवत् - चैत्र कृष्ण २०७९

कलि संवत् - ५१२३

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२३

सम्पादक

डॉ. वेदपाल

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

०८८९०३१६९६१

मुद्रक-देवमुनि-भूदेव उपाध्याय

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-४०० रु.

पाँच वर्ष-१५०० रु.

आजीवन (२० वर्ष) -६००० रु.

एक प्रति - २०/- रु.

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

०७८७८३०३३८२

ऋषि उद्यान : ०१४५-२९४८६९८

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मार्च-द्वितीय, २०२३

अनुक्रम

०१. तुलनात्मक धर्म-दर्शन	सम्पादकीय	०४
०२. महर्षि दयानन्द का मूल्याङ्कन-३	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	०६
* परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम		०८
०३. आर्यसमाज स्थापना:उद्देश्य व तिथि	आ.रामनिवास गुणग्राहक	०९
०४. अग्नि सूक्त-४०	डॉ. धर्मवीर	१३
०५. ऋग्वेद में शरीर रचना, रोगों का...	पं. शिवनारायण	१६
०६. स्थापना शताब्दी और आर्यसमाज...	आ. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड	२०
०७. VEDA MARGAM 2025 INAUGURATED		२४
०८. संस्था समाचार	श्री ज्ञानचन्द	२५
* योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर		२८
* परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट		३०
०९. संस्था की ओर से....		३२
* 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३४

www.paropkarinisabha.com

email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com/gallery/videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।
किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

कई बार व्यक्ति या संगठन अपने मन्तव्य को प्रकट न कर उसके स्थान पर कर्णप्रिय या कहें कि लोकलुभावन बातें इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि समझदार, किन्तु सरल हृदय सज्जन उनका विश्वास कर लेते हैं, किन्तु यह चालाकी अथवा छिपा एजेण्डा जब प्रकट होता है तब वह सम्पूर्ण संस्थान के प्रति विक्षोभ ही पैदा करता है। इसी प्रकार की घटना अभी १२ फरवरी २०२३ को दिल्ली के रामलीला मैदान में घटी।

जमीयत उलमा-ए-हिन्द नामक संगठन ने अपने तीन दिवसीय सम्मलेन के अन्तिम दिन सद्भावना अथवा सर्वधर्म सद्भाव के नाम से विभिन्न मत-पन्थों के आचार्यों को आमन्त्रित किया। इनमें जैन मुनि आचार्य लोकेश, परमार्थ निकेतन के मुनि चिदानन्द, सिख धर्मगुरु सरदार चंडोक सिंह आदि सम्मिलित हुए। यदि मौलाना अरशद मदनी का विषय वक्तव्य नहीं होता तो पहले दिन मौलाना महमूद मदनी के वक्तव्य के निहितार्थ की ओर साधारणतः ध्यान गया ही नहीं गया होता।

अरशद मदनी का वक्तव्य ऐतिहासिक ज्ञान से पूर्णतः शून्य तो था ही, साथ ही तुलनात्मक धर्म-दर्शन की सामान्य समझ से भी दूर था। सामान्य शिष्टाचार का भी निर्वाह मौलाना ने नहीं किया। अन्य मतावलम्बियों के लिए 'जाहिल' शब्द का प्रयोग मौलाना की शिक्षा और संस्कारों को समझने के लिए पर्याप्त है।

तुलनात्मक धर्मदर्शन के अध्येता भली प्रकार जानते हैं कि विश्व में जितने भी मतपन्थ या धर्म हैं, उनमें कौन प्राचीन तथा कौन अर्वाचीन है? मौलाना मदनी के कथन में उन्होंने इस्लाम को सबसे पुराना बताने का प्रयास किया है। एक ओर इस्लाम के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद को बताना, अरब में उनका होना (जन्म लेना), दूसरी ओर सबसे पुराना कहना। नबियों की परम्परा में मुहम्मद को आखिरी नबी कहना तथा अन्तिम की मान्यताओं

को सबसे पुराना बताना, क्या दोमुंही बातें नहीं हैं? यदि मुहम्मद पहले नबियों की परम्परा में हैं, तो उन नबियों के अनुयायियों (यहूदियों तथा ईसाईयों) के प्रति विरोधभाव का कारण भी मौलाना मदनी स्पष्ट कर देते!

सभी सम्प्रदायों की पूजा पद्धति, सांस्कृतिक विचारधारा तथा अनुयायियों की जीवन शैली पर उनके उद्गम देश का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। जहाँ पानी, ईंधन, लकड़ी या हरियाली तथा खाद्यान्न पदार्थों का अभाव या न्यूनता हैं, वहाँ की पूजा पद्धति के साथ जीवन शैली और भोज्य पदार्थों में उन पदार्थों का प्राचुर्य नहीं है। इस्लाम की अनेक मान्यताएँ इसका प्रमाण हैं। जहाँ मीलों तक वृक्ष नहीं, वहाँ अन्त्येष्टि के लिए तीन-चार क्विन्टल लकड़ी का विचार भी नहीं किया जा सकता और अनुर्वरा भूमि का बाहुल्य है, तो दाहकर्म की अपेक्षा भूखात करना (कब्र में दफनाना) अरब के रेगिस्तान में व्यावहारिक हो सकता था। वहाँ की इस परम्परा से युक्त पन्थ को भारत का धर्म (और वह भी सबसे पुराना) कहना अपने को हंसी का पात्र बनाने से अधिक कुछ भी नहीं है।

व्यक्ति की पहचान और व्यवहार का महत्त्वपूर्ण साधन/माध्यम उसका नाम (व्यक्तिवाचक संज्ञा) है। प्रत्येक मत-पन्थ तथा देश के आधार पर नाम रखने की परम्परा है। पूर्व प्रचलित परम्परा को किञ्चित् संशोधन के साथ स्वीकार करने वाले नवीन मत पन्थों के अनुयायियों में इसे स्पष्ट देखा जा सकता है। भारतवर्ष में वैदिक धर्म की अनेक मान्यताओं को परिवर्तित कर प्रवृत्त होने वाले पन्थानुयायियों में नाम रखने की परम्परा में वह अन्तर या भेद नहीं है, जो भारतीय पन्थानुयायियों तथा इस्लाम के अनुयायियों के नामों में स्पष्ट देखा जा सकता है। इस्लाम का मूल, क्योंकि यहूदी है इसलिए उनके नाम में पर्याप्त साम्य दिखाई देता है। इसे ओल्ड

टेस्टामेण्ट (पुराना धर्म नियम) में उपलब्ध वंशावलियों के नाम की इस्लाम के अनुयायियों के नाम के साथ तुलना करके देखा जा सकता है।

इस्लाम की महत्वपूर्ण धार्मिक विधि 'सुन्नत' का मूल क्या मदनी बन्धु भारत के किसी पन्थ में खोज सकते हैं? यदि उन्हें ध्यान नहीं हो तो (वैसे उन्हें तब ध्यान होगा ही कि सामी दर्शन के अनुयायियों में इसका प्रारम्भ कब हुआ था?) एक बार पुनः उसी (यहूदी) इतिहास को देख लें, जिसका वह विरोध करते हैं।

सामाजिक प्रवाह को अविच्छिन्न बनाए रखने के लिए, परिवार नामक संस्था की अनिवार्यता समाजशास्त्रीय अध्ययन में सर्वानुमत है। वैदिक भारतीय परिवार संस्था का इस्लामिक परिवार संस्था से पौर्वापर्य भी कभी मदनी महोदय ने विचारा हो- ऐसा दिखाई नहीं देता। इस्लाम की परिवार संस्था की यदि तुलना ही करनी है तो पुनः अपने मूल की ओर देख लीजिए, पता लग जाएगा, आपका मूल कहाँ है?

वर्तमान समय में जब सारा विश्व एक ग्राम में परिवर्तित होता जा रहा है, तब सर्वाधिक आवश्यकता

उन मूल्यों के संरक्षण एवं वर्धन की है, जो वैदिक-भारतीय संस्कृति का आधार हैं। सहवासी के अस्तित्व की स्वीकृति, मानव के प्रति ही नहीं अपितु प्राणिमात्र के प्रति स्नेहिल दृष्टि, जन्मभूमि के प्रति मातृभूमि का भाव, करुणा एवं स्नेह का भाव, साथ ही औदार्य के साथ विश्व बन्धुत्व का भाव- ये कुछ ऐसे बीज बिन्दु हैं, जो मानवता की रक्षा के लिए अनिवार्य रूप से अपरिहार्य हैं।

इन भावों के अध्ययन के बिना तुलना करने के प्रयास पूर्वाग्रह ग्रस्त होने के प्रमाण हैं।

मानवता की रक्षा के लिए सभी विचारों का खुले मन से अध्ययन और पूर्वाग्रह मुक्त होकर सत्य का स्वीकार अपरिहार्य है। प्रश्न तेरे-मेरे का नहीं, अपितु सत्य के स्वीकार का है। इस तुलनात्मक अध्ययन से कुछ धारणाएं तो खण्डित होंगी ही। किन्तु पन्थाई विचारों का तुलनात्मक अध्ययन मानव विकास और संरक्षण की दृष्टि से सदैव महत्वपूर्ण है। इस सत्य को जितना शीघ्र स्वीकार किया जाएगा उतना शीघ्र ही मानवता का पथ आलोकित हो सकेगा।

डॉ. वेदपाल

ऋषि उद्यान में आने वाले अतिथियों से निवेदन

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान अजमेर में आने वाले सज्जनों के निवास-भोजन की व्यवस्था की जाती है। यह व्यवस्था ठीक से चल सके, इसके लिए आप अतिथियों के सहयोग की अपेक्षा है। जो भी अतिथि यहाँ कम या अधिक दिन रुकना चाहें तो आने के कम से कम दो दिन पूर्व परोपकारिणी सभा या ऋषि उद्यान के कार्यालय में सूचना देकर स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लेवें। सूचना में अपना नाम, पता, दूरभाष व साथ में आने वाले व्यक्तियों की संख्या, उनकी अवस्था (आयु), स्त्री या पुरुष सहित बता दें। शौचालय की सुविधा भारतीय या पाश्चात्य अपेक्षित है? आपके यहाँ पहुँचने व प्रस्थान का दिन और समय तथा भोजन ग्रहण करेंगे या नहीं, यह भी स्पष्टता से बता दें। आधार कार्ड की छाया प्रति साथ लाएं। यह सब लिखकर व्हाट्सएप पर भेज देंगे तो श्रेष्ठ है।

आपकी सूचनाओं के होने पर आपके लिए व्यवस्था समुचित की जा सकेगी। अचानक बिना सूचना के आने पर होने वाली असुविधा व कष्ट से आप बच सकेंगे। साथ ही इससे यहाँ के कार्यकर्ताओं को भी अनावश्यक असुविधा से बचाने में सहायता होगी। आशा है आपका समुचित सहयोग मिल सकेगा। **सूचना हेतु सम्पर्क-**

ऋषि उद्यान कार्यालय - ०१४५-२९४८६९८ परोपकारिणी सभा कार्यालय - ०१४५-२४६०१६४
व्हाट्सएप - ८८९०३१६९६१ सम्पर्क का समय - ११ से ४ बजे तक
(किसी एक सम्पर्क पर सूचना देना पर्याप्त रहेगा) निवेदक - मन्त्री

महर्षि दयानन्द का मूल्याङ्कन-३

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

यह विषय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, विचारणीय, व्यापक व प्रेरणाप्रद है। पीछे कुछ चर्चा की गई है कि ऋषि जी ने मानव समाज देश व जाति के प्रत्येक वर्ग के कल्याण तथा उत्थान का सन्देश देकर सबकी उन्नति का आन्दोलन छेड़ा। किसी को भी उपेक्षित व तिरस्कृत करने को आप अधर्म व पाप मानते थे। उस युग में भारत में विधवा स्त्री का किसी शुभ कार्य में उपस्थित होना परिवार व समाज में अपशकुन माना जाता था।

यह बताया जा चुका है कि ८ नवम्बर १८८३ को महर्षि के बलिदान के समय श्रद्धाञ्जलि के लिये जो विराट् सभा आयोजित की गई। उसी सभा में देश के सबसे बड़े शिक्षा आन्दोलन-डी.ए.वी. संस्थान का जन्म हुआ। महर्षि का मूल्याङ्कन करने वाले बड़े-बड़े महानुभावों का ध्यान भी उस सभा की चर्चा करते समय इस तथ्य की ओर नहीं गया कि उस ऐतिहासिक सभा में ऋषि की कृपा से तब देश में पहली बार एक विधवा देवी माता भगवती ने भी व्याख्यान दिया। इतिहास को इस व्याख्यान ने नई दिशा दी। यह ऋषि के सन्देश, उपदेश और वैदिक ज्ञानधारा का ही तो फल था। आश्चर्य का विषय है कि उस सभा के एक मुख्य वक्ता इतिहास पुरुष लाला लाजपतराय जी ने उस देवी के व्याख्यान और नाम का उल्लेख तक नहीं किया।

ऋषि का मूल्याङ्कन करते हुये इस लेखमाला में मुझे इस पहलु पर फिर से इसी लिये लिखना पड़ा है कि यह तथ्य इतिहास में तथा पाठकों के हृदय पर अंकित हो जावे। जब इस देवी ने ऋषि जी से अपनी पहली व अन्तिम भेंट के समय अपने लिये कोई आज्ञा पूछी तो ऋषि जी ने कहा, “जितना तेरे पास ज्ञान है तू उतना स्त्री जाति को देती रह।” उसने अक्षरशः इस आज्ञा का पालन किया। इन पंक्तियों का लेखक ऋषि की महिमा

पर लिखते हुए अपनी ५०-६० पुस्तकों में यह घटना लिख चुका है।

ऋषि का मूल्याङ्कन करते हुए ऋषि जी की इस देन तथा उपकार के विषय में क्या-क्या लिखा जावे? आर्यसमाजी देवियों ने समय-समय पर देश व समाज का इतिहास बदलकर रख दिया। मेरठ जनपद के बड़ोत क्षेत्र में जब महात्मा लटूरसिंह के प्रचार से सत्तर जन आर्यसमाजी बन गये तो उनमें अग्रणी जो थे वे जाट वर्ग के युवक थे। कुछ ही समय के पश्चात् पोपों के दबाव से इनका घोर विरोध होने लगा। सामाजिक बहिष्कार की धमकी से केवल एक महाशय रघुवीरसिंह अडिग रह सके, शेष डगमगा गये। उस युग में यहाँ-वहाँ आर्यसमाजी बहिष्कृत होते ही रहते थे। बहुत लम्बे-लम्बे व भयङ्कर बहिष्कार स्थान-स्थान पर हुये।

परन्तु महाशय रणधीर सिंह जी का बहिष्कार २४ घण्टे में ही टूट गया। इसका एकमेव कारण महाशय रणधीरसिंह जी की दृढ़ता ही नहीं थी। इसका उससे भी बड़ा कारण महाशय रणधीरसिंह जी की विधवा माता चन्द्रकौर जी का असाधारण साहस, शौर्य तथा धर्मभाव था। उस माता ने बड़े-बड़े पोपों पण्डों के छक्के छुड़ा दिये। हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज के इतिहास के तीसरे भाग में यह घटना पूरी छप रही है। परोपकारी के पाठकों को यह जानकर गौरव होगा कि वह वीर माता डॉ. वेदपाल जी की सगी दादी थी। आर्यों ने ऋषि का मूल्याङ्कन करते हुये ऐसी प्रमुख माताओं से न्याय नहीं किया। विरोधी सोच के इतिहासकार ऋषि को कैसे सहन कर सकते हैं?

महर्षि के आगमन से पूर्व गोरी जाति के राज में शासकों के ईसाई मत अनुयायी होने से चर्च को पूरा राजकीय समर्थन धर्म प्रचार के लिये मिलता रहा। उच्च

शिक्षित हिन्दू बहुत बड़ी संख्या में धड़ाधड़ ईसाई बनते जा रहे थे। स्वामी विवेकानन्द जी के बंगाल में राजा राम मोहनराय तथा केशवचन्द्र सेन भी ईसाइयों के प्रभाव से व जाल से न बच पाये। मैक्समूलर की पुस्तक my Indian Friends पढ़िये। आँखें खुल जायेंगी। उसने श्रीकृष्ण की निन्दा करते हुए अत्यन्त घटिया शब्दों का प्रयोग किया। किस हिन्दू धर्मगुरु ने उसका उत्तर दिया? आर्यसमाज ने ही 'मैक्समूलर का एक्सरे' में उसका मुँह तोड़ उत्तर दिया।

इसके विपरीत सन् १८८१-१८८२ में एक गोरा पादरी जोसेफ़ कुक दनदनाता हुआ कोलकाता आदि बड़े-बड़े भारतीय नगरों में अत्यन्त ओजस्वी भाषा में ईसाई मत का प्रचार करके वाह! वाह!! लूट रहा था। उसका मुख्य विचार बिन्दु यह था कि भविष्य का मानव-धर्म केवल ईश्वरीय ग्रन्थ बाइबल है। सब उसके व्याख्यानों पर मुग्ध थे।

ऋषि ने चुनौती दे दी- महर्षि दयानन्द ने मुम्बई पहुँचकर उसे शास्त्रार्थ की चुनौती दे दी। भारी भीड़ जिसे सुनने के लिये उमड़ कर आती थी वह अब ऋषि का पत्र पाकर बिना पत्रोत्तर दिये भाग कर पूना पहुँच गया। ऋषि से ऐसा भयभीत हुआ कि गोरे शासकों का यह विलक्षण वक्ता वह राजगुरु भागकर पूना जा पहुँचा फिर इतना काँपता-हाँपता फिरता था कि महर्षि पूना भी आ जावेगा। बिना बताये पीठ दिखाकर वही पादरी जोसेफ़ कुक पीठ दिखाकर इंग्लैण्ड पहुँच गया। ऋषि की ललकार हुंकार का सामना कौन करे! गोराशाही, चर्च तथा गोरों के भारतीय भक्त यह देखकर दंग रह गये। फिर वह पादरी ऋषि के बलिदान के बाद भी भारत आने का साहस न जुटा सका।

इस देश में गोरों के राज में ऐसी दूसरी घटना नहीं मिलेगी। ऋषि का मूल्याङ्कन इस घटना के बिना कौन कर सकता है? हिन्दुत्व की दुहाई देने वाली सरकार और उसके वक्ता अवक्ता इस घटना जैसी दूसरी कोई

घटना तो बतायें दिखायें।

इस घटना की उपेक्षा करके इतिहास लेखकों ने ऋषि के साथ ही नहीं भारतीय इतिहास के साथ घोर अन्याय किया है। उस युग के शासक, धर्मान्ध प्रेस व देशी-विदेशी लोग सब इस घटना को जान गये थे कि यह ऋषि दयानन्द से पिटने के भय से भारत से भाग आया है।

ऋषि की महिमा, ऋषि की विद्वत्ता, ऋषि के साहस, ऋषि के व्यक्तित्व व धर्मभाव को समझने के लिये इस घटना की न तो उपेक्षा ही की जा सकती है और न ही ऋषि का ठीक-ठीक मूल्याङ्कन ही किया जा सकता है। अधिक जानने के इच्छुक सज्जन इसे 'महर्षि दयानन्द : सम्पूर्ण जीवन चरित्र' में सप्रमाण देखें।^१

महर्षि दयानन्द जी ने सब मानवों के कल्याण, सुख शान्ति तथा उन्नति का आन्दोलन चलाया। किसी एक वर्ग, समूह अथवा जात बिरादरी की उन्नति के लिये दुःख कष्ट नहीं झेले। 'संसार का उपकार करने' का उद्देश्य लेकर वे मैदान में उतरे। उनके जीवन में उ.प्र. तथा पंजाब में दो स्थानों पर उनको सुनने वाले दो साधारण श्रोताओं ने उन से एक जैसा ही प्रश्न पूछा। उ. प्र. में एक साधारण सा दिखने वाले श्रोता से ऋषि ने कहा, "भाई तू भी कुछ पूछ ले।" उसने कहा, "महाराज! आपने आत्मोन्नति व कल्याण के लिये ज्ञान प्राप्ति के साथ ज्ञान देने व दान देने की बात कही है। मैं न दानी हूँ और न ज्ञानी। मुझ दरिद्र का कल्याण कैसे होगा?"

ऋषि ने उसे कहा, "तू पाप कर्म करने से बचकर भले कर्म करने में जीवन लगा दे। पाप का न करना भी एक पुण्य कर्म है। जब एक व्यक्ति पाप करना छोड़ दे तो यह जानो कि बुरे लोगों में एक की कमी हो गई तथा श्रेष्ठ कर्म करने वालों में एक धर्मात्मा की वृद्धि हो गई।" ऐसे ही एक भक्त से कहा कि कोई महात्मा न बन सके तो धर्मात्मा तो हर कोई बन सकता है। सबके कल्याण के लिये ऐसी सर्वोपयोगी शिक्षा देना यह प्रकाण्ड विद्वान् ऋषि दयानन्द की ही विशेषता है।

जन सेवा में समर्पित जन सेवकों का सम्मान- इतिहास प्रेमी पाठक इस बात की साक्षी देंगे कि देश के बड़े से बड़े संगठन के इतिहास में किसी सेवक (peon) की जीवनी न तो आज तक लिखी गई है और न ही छपी है। यह विलक्षणता ऋषि दयानन्द के मिशन की ही है कि इसके इतिहास में कई अत्यन्त साधारण से समाज सेवक अपने आचार व्यवहार से इतने ऊँचे उठ गये कि इतिहास में अमर हो गये।

स्वामी बेधड़क जी आर्यसमाज के एक कर्मठ, परोपकारी और लगनशील प्रचारक थे। वह ९-१० बार देश व समाज हित में जेल गये। आर्यसमाज के इतिहास में तथा स्वराज्य संग्राम में अमर हो गये। ऋषि दयानन्द का मूल्याङ्कन करते हुये उनकी इस देन की उपेक्षा करना क्या इतिहासज्ञता की अपनी अज्ञानता का परिचय नहीं है?

नर नाहर वीर खण्डू सैनी- पटियाल राजद्रोह के अभियोग में पटियाला स्टेट के जिन आर्यों को यातनायें दी गईं, जेल जाना पड़ा, जिन्हें सताया दबाया गया उनमें एक नर नाहर वीर खण्डू सैनी पटियाला समाज का निडर तथा निष्ठावान सेवक भी था। आर्यसमाज का इतिहास उसकी सेवा की चर्चा के बिना अधूरा है। उसका जीवन भी छपा है। क्या कांग्रेस ने अपने किसी प्रादेशिक कार्यालय के सेवक की जीवनी कभी छपवाई है? इस निष्काम, निडर सेवक की स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. चमूपति जी ने भी गौरवपूर्ण चर्चा की है। इन पंक्तियों के लेखक ने उसकी साठ पृष्ठ की जीवनी लिखी है। यह छपकर प्रचारित हो गई है।

यह ऋषि दयानन्द की अनुप्रणित करने वाली शिक्षा का फल है कि ऐसे-ऐसे सेवकों को नर रत्न मानकर आर्यसमाज ने इनके जीवन लिखे व छपवाये हैं।

धर्मवीर धर्मसिंह- आर्यसमाज में कोई विरला व्यक्ति होगा जो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के यशस्वी सेवक धर्मवीर धर्मसिंह के नाम व काम को नहीं जानता। आर्यसमाज के तीन खण्डों में छपे इतिहास को आर्यसमाज के सबसे पुराने प्रकाशन संस्थान ने दिल्ली से प्रकाशित किया है। इसमें एक से अधिक बार इस प्राणवीर का उल्लेख है। अनेक बड़े-बड़े इतिहास से जुड़े ग्रन्थों में इस धर्मवीर का यशोगान है।

जब स्वामी श्रद्धानन्द जी पर गोलियाँ बरसाने वाले मिस्टर अब्दुल रशीद को धर्मसिंह ने तत्काल दबोच लिया तो उसने दो गोलियाँ धर्मसिंह पर भी बरसाईं। गांधी बापू ने अब्दुल रशीद को तो भाई अब्दुल रशीद बताया, परन्तु रोलट एक्ट के समय दिल्ली में हर चौक चौराहे पर इस देशभक्त सैनिक ने विज्ञापन लगवाने वाली टोली का नेतृत्व किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जब संगीनों से सीना अड़ाया तब भी धर्मसिंह साथ था। आर्यसमाज ने इस स्वतन्त्रता सेनानी धर्मवीर धर्मसिंह की जीवनी भी कई बार छपवाई है। सज्जनों! क्या इस चर्चा के बिना ऋषि दयानन्द का मूल्याङ्कन सम्भव है?

द्रष्टव्य: महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्पूर्ण जीवन चरित्र भाग-2, पृष्ठ ५५७-५५९ तक। (क्रमशः)

- वेद सदन, नई सूरज नगरी,

अबोहर, पंजाब। मो. ९४१७६४७१३३

परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम

०१.	साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर	-	११ से १८ जून-२०२३
०२.	दम्पति शिविर	-	२४ से २७ अगस्त-२०२३
०३.	डॉ. धर्मवीर स्मृति दिवस	-	०६ अक्टूबर-२०२३
०४.	साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर	-	२९ अक्टूबर से ०५ नवम्बर-२०२३
०५.	ऋषि मेला	-	१७, १८, १९ नवम्बर-२०२३

कृपया शिविर में भाग लेने के इच्छुक शिविरार्थी पूर्व से ही प्रतिभाग की सूचना दें।

आर्यसमाज स्थापना : उद्देश्य व तिथि

आचार्य रामनिवास 'गुणग्राहक'

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का वेद विद्या का प्रचार-प्रसार अज्ञानान्धकार-जन्मजात अन्धविश्वासों व पाखण्डों में दबी पड़ी मानवीय चेतना-संवेदना को मानो संजीवनी प्रदान करने वाली ऊर्जा के साथ कुछ कर दिखाने वाली उमंग से भर रहा था। धर्म के नाम पर प्रचलित परम्पराओं और अनुष्ठानों में कुछ भी तो ऐसा नहीं बचा था, जो विवेकशील मानव की स्वाभाविक जिज्ञासा पर मुँह खोल सके। चेतना को चुनौती देने वाला चिन्तन पाकर जनमानस की जागृति व्यवहार के धरातल पर साकार होने के लिए कुलबुलाने लगी। ऐसी ही मनःस्थिति वाले कुछ उदारचेता सज्जनों ने मुम्बई प्रवास के समय महर्षि से प्रार्थना की कि महाराज! आपके विचार जो धर्मोपदेश के रूप में हमें प्राप्त हो रहे हैं, इन्हें चिरस्थायी बनाने के लिए किसी संस्था का सृजन कर लिया जाए? ऋषि वर ने उनकी भावना और प्रार्थना को हृदयंगम करते हुए कहा- “आज देश में धार्मिक संस्थाओं और पंथों की कमी नहीं है। मैं अपनी कोई नई बात नहीं कहता। मैं तो वेद शास्त्रों में प्रतिपादित बातों का ही उपदेश करता हूँ।... यदि संस्था में पुरुषार्थ करके परोपकार कर सको तो मेरी मनाही नहीं है। किन्तु यदि यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे चलकर गड़बड़ाध्याय हो जाएगा। मैं तो जैसा अन्यों को उपदेश करता हूँ, वैसे ही आपको भी करूँगा। इतना लक्ष्य में रखना कि मेरा कोई स्वतन्त्र मत नहीं है और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूँ। यदि मेरी भी कोई गलती आगे चलकर पाई जाए तो युक्तिपूर्वक परीक्षा करके उसे भी सुधार लेना, नहीं तो आगे चलकर यह भी एक मत हो जाएगा। भारत में जितने भी मतमतान्तर प्रचलित हैं, वेदशास्त्र रूपी समुद्र में मिला देने पर नदी के समान सब पुनः धर्मऐक्य हो जाएगा। इससे धार्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक सुधारणा अपने आप हो

जाएगी।”

इस विचार के बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, बुधवार सात अप्रैल सन् १८७५ को (संवत्-१९३१) सायं ४ बजे श्री माणिक जी की बाड़ी में आर्यसमाज की स्थापना हुई। आर्यसमाज के प्रथम प्रधान बनने का सौभाग्य-श्री गिरधरलाल दयालदास कोठारी को तथा मन्त्री बनने का सौभाग्य पानाचन्द आनन्द जी पारेख को प्राप्त हुआ। लगभग सौ सदस्यों के साथ यह पहला आर्यसमाज चलने लगा। इस आर्यसमाज के सिद्धान्त सम्बन्धी नियम स्वयं ऋषि दयानन्द ने विधान सम्बन्धी राव साहब दादोबा पाण्डुरंग तरखड़कर, श्री पानाचन्द आनन्द जी पारेख और श्री सेवकलाल कृष्णदास आदि ने मिलकर तैयार किये व बम्बई हाइकोर्ट के वकील श्री गिरधरलाल दयालदास कोठारी को दिखाकर व्यवस्थित कर लिये। स्वामी जी की पंजाब प्रचार यात्रा के समय लाहौर में आर्यसमाज स्थापित हुआ। वहीं महर्षि ने सिद्धान्त सम्बन्धी दस नियम तैयार किये तथा विधान सम्बन्धी नियम पृथक् रखे गये। सन् १८८२ में आर्यसमाज बम्बई के उत्सव पर स्वामी जी बम्बई पधारे और लाहौर में निर्मित नये संशोधित नियमों को स्वीकार करने की प्रेरणा की। इसके लिए ८ अप्रैल १८८२ को रात्रि ८ बजे स्वामी जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज की साधारण सभा का अधिवेशन हुआ। इसमें सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित करके पाँच सज्जनों की उपसमिति बम्बई व लाहौर के नियमों का तुलनात्मक अध्ययन करके निर्णय करने के लिए बनाने का निर्णय हुआ।

महर्षि के परलोक गमन के बाद इस उपसमिति ने २८ मार्च १८८५ शनिवार रात्रि ८ बजे की साधारण सभा की बैठक में अपना निष्कर्ष रखा। इसे अन्ततः २४ अक्टूबर १८८५ की अन्तरंग सभा में स्वीकृति मिली

और सबके संज्ञान में लाने के लिए इन्हें छपाकर प्रसिद्ध किया गया। जब इन नियम-उपनियमों में संशोधन को लेकर विचार-विमर्श चल रहा था, तब ऋषि दयानन्द ने अपने विचार रखते हुए जो कहा, वह भी हम आर्यों के लिए अविस्मरणीय है। -“भाई स्वदेश सुधार की बात हमको साथ मिल के करने की है। दो-चार बातों में हमारा मतभेद रहा तो और बात हम साथ मिल के क्यों न करें? जिन बातों में मतभेद हो, वे भी जब हम प्रीति के साथ बैठकर विचार करेंगे तो निश्चय हो जाएगा। इसी प्रकार से कुछ बातों में मतभेद होने से आपस में लड़ के ही हम लोगों ने भारत वर्ष की दुर्दशा की है। इसी से शिष्ट लोगों में प्रथम द्वेषाग्नि को दूर करने से ही यथोचित विचार होगा। पक्षपात छोड़ के प्रीति से विचार करने से ही धर्मोन्नति होगी। इसलिए पूर्व नियम बदले गये हैं। यह लाहौर के बनाये हुए (नियम) ऐसे रचे हैं कि जिसमें कोई मिथ्यानुवाद नहीं कर सकेंगे। इसलिए बम्बई के नियम भी सुधार लेने चाहिएँ कि जिससे सारे भारतवर्ष के नियम एक हो जाएँ। हाँ उपनियमों में स्थानिक (स्थान विशेष की) व्यवस्था के लिए सुधार कर लेना किन्तु नियम तो एक ही होने चाहिएँ।”

सुधी पाठक! महर्षि दयानन्द के इन मार्मिक शब्दों को एक बार और पढ़िये, ऋषिवर जो कहना चाह रहे हैं, उसे समझिये। दो चार बातों में मतभेद रहा तो अन्य बातों को साथ मिलकर क्यों न करें? यह सन्देश ऋषिवर किन को दे रहे थे? क्या हम आर्यों को? क्या यह सन्देश तात्कालिक था या सब आर्यों को सदा के लिए काम आने वाला था? क्या आज इसकी हमें सर्वाधिक आवश्यकता नहीं है? “जिस बात में मतभेद हो, वे भी जब प्रीति के साथ बैठकर विचार करेंगे तो निश्चय एकमत हो जाएगा...कुछ बातों में मतभेद होने से आपस में लड़ के ही हम लोगों ने भारतवर्ष की दुर्दशा की है।... शिष्ट लोगों में प्रथम द्वेषाग्नि को दूर करने से ही यथोचित विचार होगा। पक्षपात छोड़ के प्रीति से विचार करने से

ही धर्मोन्नति होगी।” सामान्य समझ का व्यक्ति भी बता सकता है कि ऋषि ने ये शब्द कैसी परिस्थिति में कहे होंगे? ऋषिवर द्वारा निर्धारित, संशोधित दस नियम ऋषि की अध्यक्षता में होने वाली आर्यसमाज की साधारण सभा में सरलता से स्वीकार कर लिये जाते तो क्या ऋषि को ऐसा कहने की आवश्यकता पड़ती? ७-८ वर्ष पूर्व जो लोग जिस ऋषि दयानन्द से उनके विचारों को उनके बाद भी प्रचारित-प्रसारित करने के लिए नतसिर व करबद्ध प्रार्थना कर रहे थे, वे ही आज ऋषि के उन शाश्वत सिद्धान्तों के संवाहक नियमों को स्वीकार करने में बौद्धिक अडंगेबाजी कर रहे थे, जो नियम विश्व साहित्य के अनुपम, अनूठे, अद्वितीय और अनमोल सूत्र कहे जा सकते हैं। इस विषय में उन आर्यजनों को किसी प्रकार का दोष देना सर्वथा अनुचित होगा। ‘स्वभावो दुरतिक्रमः’ के अनुसार मानव स्वभाव को बदलना संसार का सबसे कठिन काम है। श्रीकृष्ण के शब्दों में- ‘प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति।’ अर्थात् सभी मनुष्य अपने स्वभाव के अनुसार ही कार्य करते हैं, थोड़ी देर के लिए उसे दबाने से कुछ लाभ नहीं होता। इस लिए स्वभाव को ही पवित्र बनाना चाहिए। मगर यह काम सरल होता तो संसार पवित्रात्माओं से भर जाता।

यहाँ मैं एक निवेदन सब सुधी पाठकों से करना चाहता हूँ वह यह है कि हमारे हृदयों में गुरुवर देव दयानन्द के प्रति अपार श्रद्धा होनी चाहिए। जिस दयानन्द की बौद्धिक प्रतिभा के सामने उस काल का एक भी विद्वान्-धर्माचार्य न टिक सका। जिसके द्वारा उठाये गये प्रश्नों के उत्तर देने का साहस तब से अब तक कोई नहीं कर सका। उसके द्वारा स्थापित वैदिक सिद्धान्तों-मन्तव्यों का सतर्क खण्डन तब से अब तक कोई नहीं कर सका। इतना ही नहीं कल तक जो ऋषि दयानन्द का नाम तक सुनना नहीं चाहते थे, वे ही पुराण पन्थी विरोधियों के कड़वे प्रश्नों व तर्कों से बचने के लिए ऋषि की पाखण्ड-खण्डनी पताका के नीचे आ रहे हैं। टी.वी. के न्यूज

चैनलों पर जातिवाद और अन्धविश्वासों को लेकर चलने वाली चर्चाएँ चीख-चीख कर बता रही हैं कि पुराण-पुष्ट सनातन धर्म आने वाले वर्षों में वेदोक्त सनातन धर्म का स्वरूप स्वीकार करने जा रहा है। इधर हम आर्य कहलाने वाले ऋषिवर के सन्देशों को लेकर “किन्तु-परन्तु” वाली प्रवृत्ति से पीछा नहीं छोड़ पा रहे हैं। हे परमात्मा! तेरे अमृत पुत्र मानव के मन-मस्तिष्क में कैसी कुण्ठा, कैसे पूर्वाग्रह जड़ें जमा चुके हैं कि मेरे देश के कुछ नासमझ लोग कुछ नासमझों की नासमझी को धर्म के नाम पर सहज भाव से स्वीकार कर रहे हैं, तो उधर समझदार कहलाने वाले लोग सत्यनिष्ठ संन्यासी की सच्ची, सरल, सतर्क व शाश्वत-सिद्धान्तों से सुपुष्ट-सुप्रमाणित सुखद शिक्षा को स्वीकार करने में शंका-सन्देह खड़े कर रहे हैं। सरल शब्दों में कहें तो या तो देश में धर्म के नाम पर अन्धविश्वास है या अविश्वास, सत्य धर्म के प्रति सच्चा विश्वास करना मानव पूरी तरह से भुला बैठा है। आर्यसमाज के वर्तमान दस नियमों को महर्षि की प्रबल प्रेरणा के बाद भी स्वीकार करने में ऋषिवर के साक्षात् सम्बन्ध में रहने वाले आर्यों को पूरे साढ़े तीन वर्ष लग गये। क्या यही हमारी ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धा थी? क्या इन दस नियमों में ऐसी कुछ भाषा की या सिद्धान्तों की उलझन है, जिस पर साढ़े तीन वर्ष तक विचार-विमर्श किया जाए? आर्यों! विश्वास करना सीखो।

तिथि- आर्यसमाज की स्थापना तिथि को लेकर दो मत मिलते हैं- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सं. १९३१ तदनुसार बुधवार ७ अप्रैल १८७५ के पक्ष में १. आर्यसमाज मुम्बई का शिलालेख २. आर्यों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का २७ जनवरी १९४० का निर्णय, ३. श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय लिखित जीवन चरित, ४. मुम्बई आर्यसमाज का कार्यवाही रजिस्टर आदि। दूसरा मत चैत्र शु. पंचमी, १० अप्रैल को स्थापना तिथि मानता है। इसके पक्ष में- १. टाइम्स ऑफ इण्डिया का-१० अप्रैल अंक, २. जामये जमशेद व बाम्बे गजट की सूचना, ३.

पं. लेखराम कृत ऋषि का जीवन-चरित्र, ४. ऋषि के पत्र-व्यवहार का अंश आदि।

इन पर गम्भीरता से विचार कर के देखें तो एक छोटी सी मानव सुलभ भूल ही इनके मूल में दिखती है। वस्तुतः आर्यसमाज की स्थापना तो चैत्र शु. प्रतिपदा, सं. १९३१ तदनुसार-७ अप्रैल, बुधवार-१८७५ को ही हो गई थी। इसका पहला सार्वजनिक कार्यक्रम साप्ताहिक सत्संग के रूप में चैत्र शु. पंचमी शनिवार को हुआ था। इस प्रथम साप्ताहिक सत्संग सभा में- ‘आर्यसमाज की आवश्यकता’ विषय पर ऋषि दयानन्द का मनोहर प्रवचन हुआ। इसी कार्यक्रम की सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई। इसी का उल्लेख ऋषिवर ने अपने उस पत्र में किया जो अगले ही दिन चैत्र. शु. ६ को श्रीगोपाल राव हरिदेशमुख को लिखा। बस इसी को लेकर कतिपय लोगों ने आर्यसमाज की स्थापना तिथि को लेकर यह मत खड़ा कर दिया। टाइम्स ऑफ इण्डिया में प्रकाशित सूचना और ऋषि के पत्र से अधिक पुष्ट प्रमाण उनके लिए क्या हो सकते थे? हाँ, अगर न्यायबुद्धि से कुछ और पढ़ते-पढ़ाते तो सम्भवतः कुछ अधिक विश्वसनीय प्रमाण भी मिल जाते। सन् १८७० में ही ऋषि दयानन्द के भक्त बन चुके सुन्दरदास जी के सुपुत्र दामोदर द्वारा गुजराती में लिखित- ‘मुम्बई आर्यसमाजानो इतिहास’ ही पढ़ लेते, जो तथ्यों पर आधारित है। आर्यसमाज बम्बई के कार्यवाही रजिस्टर भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का ही समर्थन कर रहे हैं। आर्यसमाज बम्बई के १८८२ के वार्षिक उत्सव पर संयोग से ऋषिवर भी पधारे थे। उत्सव एक दिन पूर्व अमावस्या को गोविन्द विष्णु की शाला में सांझ ५:३० बजे शुरू हुआ। कविवर कृष्णराम इच्छाराम का देशोन्नति पर व्याख्यान हुआ। अगले दिन २० मार्च, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सं. १९३८ सन् १८८२ के दिन आर्यसमाज का जन्म होने का महोत्सव मनाया गया। उस दिन आर्यसमाज के नये खरीदे गये भवन में हवन हुआ। तीन घण्टे चले हवन के बाद ऋषि दयानन्द का

वेद विषय पर व्याख्यान हुआ। स्वामी जी के व्याख्यान की मूलभूत बातें भी उस रजिस्टर में अंकित हैं। क्या इस कार्यवाही रजिस्टर पर भी शंका करना ठीक होगा, जिसे तात्कालिक रूप से अधिकारियों द्वारा लिखा गया था? जिसमें ऋषिवर की उपस्थिति ही नहीं उनके व्याख्यान का संक्षिप्त संकेत हो, विवरण हो, क्या उसकी सावधानी पर सन्देह किया जाना चाहिए?

दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य है आर्यसमाज बम्बई के नये भवन की आधार शिला के समय रखा गया ताम्रपत्र। उसके शब्द हैं- “महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सबसे प्रथम आर्यसमाज की स्थापना बम्बई में विक्रमी संवत्-१९३१ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन की थी।” विचारने की बात है कि अगर चैत्र शु. पंचमी, १०

अप्रैल को स्थापना होती तो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की कल्पना का भी कोई आधार नहीं रहता। हाँ पंचमी की कल्पना का आधार तो है कि उस दिन आर्यसमाज का प्रथम साप्ताहिक सत्संग सार्वजनिक रूप से बड़े हर्ष उल्लास के साथ हुआ। उसी की सूचना टाइम्स ऑफ इण्डिया आदि समाचार पत्रों में छपी। आशा है तथ्यों व तर्कों के आड़ने में यह स्पष्ट है, सुप्रसिद्ध है कि निर्विवाद रूप से आर्यसमाज की स्थापना चैत्र शु. प्रतिपदा को ही सब आर्यों द्वारा पूरे उत्साहपूर्वक स्वीकार कर ली जाएगी और प्रतिवर्ष कुछ ठोस परिणाम देने वाली कार्य योजना के साथ आर्यजन इसे मनाते रहेंगे।

ग्राम- सूरौता, भरतपुर। मो. ९०७९०३९०८८

आर्यसमाज, केसरगंज, अजमेर में ऋषि बोध उत्सव की धूम

१९ फरवरी २०२३ को केसरगंज स्थित आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान में ऋषि बोध दिवस धूमधाम से मनाया गया। जिसमें विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए।

यजमान:- नवीन मिश्र, कृपाल सिंह तोमर, चिरंजीलाल शर्मा, श्रीमती विजयालक्ष्मी शर्मा, श्रीमती मोहिनी, श्रीमती, श्रीमती सन्ध्या भदौरिया, मोहनचन्द, किशनसिंह, लालचन्द आर्य

ईश वन्दना- लाल चन्द आर्य

भजनोपदेशक- पं० अमर सिंह जी ने ऋषि दयानन्द के विचारों को अपने ८ भजनों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

‘ईश्वर तेरा अगर सहारा न होता दुनिया में कोई हमारा न होता’ सुन्दर भजन प्रस्तुत किया।

‘आज उलझन में उलझी है दुनिया कोई सुलझाने वाला नहीं, राह भटकाने वाले अधिक है मार्ग दिखलाने वाला नहीं है’ सुन्दर भजन प्रस्तुत किया।

आचार्य कर्मवीर- ऋषि बोध उत्सव के उपलक्ष्य पर स्वामी जी के कार्यों पर प्रकाश डाला। स्वामी दयानन्द ने कहा जो सत्य है उसे ग्रहण करो और जो असत्य है उसका त्याग करें। ईश्वर के सच्चे स्वरूप के बारे में बताया। स्वामी जी ने वेदों के मार्ग पर चलने का सन्देश दिया।

मुख्य अतिथि- डॉ श्री गोपाल बाहेती जी ने दिल्ली में आयोजित ऋषि दयानन्द की 200वीं जयन्ती के बारे में बताते हुए स्वामी दयानन्द की उपलब्धियां बताई समाज कैसा हो, सभी में प्रेम सद्भाव हो, शिक्षा का समान अधिकार हो, स्वामी जी ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया, ईश्वर के सच्चे स्वरूप के बारे में बताया, समाज में फैली अराजकता को दूर किया।

श्रीमती मोहिनी तोमर- सुन्दर भजन प्रस्तुत किया।

कविता- पं० जागेश्वर प्रसाद निर्मल ने एक सुन्दर कविता प्रस्तुत की।

अध्यक्षता- उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा रचित ग्रन्थों के स्वाध्याय पर बल देते हुए संस्कृत सीखने सद्व्यवहार करने तथा गौ करुणा के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों की उपादेयता प्रतिपादित की इन ग्रन्थों में व्यवहारभानु, संस्कृतवाक्यप्रबोध, गो करुणानिधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला, आर्याभिविनय, संस्कारविधि, सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का उल्लेख किया।

धन्यवाद, सूचनाएँ, शान्ति पाठ जयघोषादि कार्यक्रम के पश्चात् प्रसाद वितरण किया। कार्यक्रम का संचालन समाज के मंत्री कृपाल सिंह तोमर ने किया।

अग्नि सूक्त-४०

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्य

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी शृंखला में ऋग्वेद के प्रथम सूक्त 'अग्निसूक्त' की व्याख्यान माला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।

-सम्पादक

उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।।

यह वेदज्ञान की चर्चा का प्रसंग है। इसमें हम वेद मन्त्रों पर विचार कर रहे हैं और इस क्रम में हम ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के मन्त्रों पर विचार कर रहे हैं। वर्तमान में हम उसके सातवें मन्त्र पर विचार कर रहे हैं। इसका ऋषि मधुच्छन्दा, देवता अग्नि और छन्द गायत्री है। मन्त्र में, उपासना कैसे की जाए इस पर चर्चा की है। यहाँ पर कहा गया है कि उपासना ज्ञानपूर्वक होनी चाहिए पीछे हमने देखा कि ज्ञानपूर्वक उपासना करने से कैसे प्राप्ति होती है। परमेश्वर स्वयं ज्ञानस्वरूप है, वो आनन्दस्वरूप है, क्योंकि ज्ञान का जो परिणाम है वो सुख है, वो आनन्द है। अर्थात् जिसके पास जितना-जितना अधिक ज्ञान होता है, उसके पास उतना-उतना सुविधा-सुख होता है। शरीर की दृष्टि से सुविधायें होती हैं और मन, बुद्धि व आत्मा की दृष्टि से सुख का अनुभव होता है। तो हमारे यहाँ जो सुख है- 'ख' कहते हैं इन्द्रियों को, जो इन्द्रियों को अच्छा लगता है, उसे सुख कहा जाता है। जो इन्द्रियों के लिए कष्टदायक है, बुरा है, कठिन है, जो इन्द्रियों को अच्छा नहीं लगता उसे 'दुःख' कहा गया है। तो इसलिए हम सुख पाना चाहते हैं, वह सुख केवल शरीर तक न हो, आगे भी हो उसके लिए हमें, जो सुख का मूल है, आधार है, उस तक पहुँचाना चाहिए।

इसकी चर्चा करते हुए उपनिषद्कार ने एक बहुत सुन्दर बात लिखी है- भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।

जो संसार है वह परावर है, यहाँ से वहाँ तक, वहाँ से यहाँ तक। ऊपर से नीचे तक, नीचे से ऊपर तक। जहाँ तक मस्तिष्क जा सकता है, मन की दौड़ लग सकती है, वहाँ तक। जो आपके मन में सन्देह है, बाधा है, रुकावट है, दुःख है, यह सब अज्ञान का परिणाम है। जैसे-जैसे आप उपासना की ओर बढ़ते हैं, उपासना जब बहुत बड़े सुख का कारण है तो उपासना छोटे सुख का भी कारण है। हम यह समझते हैं कि वह परमेश्वर बहुत बड़े सुख को तो देने वाला है, लेकिन छोटे सुख के लिए हमें शायद छोटे आदमी के पास जाने की आवश्यकता है। इसलिए हम प्रकृति की ओर मुड़ जाते हैं और प्रकृति के पदार्थों से सुख पाने की चेष्टा करते हैं। प्रकृति के पदार्थ केवल शरीर के स्तर पर सुख दे सकते हैं, देते हैं। शरीर के अभाव को, असुविधा को, कष्ट को, प्रकृति के साधन उपाय दे सकते हैं। वो साधन तो आत्मा से ही आयेंगे। तो जितने-जितने हम परमात्मा के निकट जाते जायेंगे, उतना-उतना सुख हमें सदा प्राप्त होगा।

ऋषि दयानन्द कहते हैं कि सुख का मूल उपासना है, तो हमें छोटी उपासना से सुख न मिले यह कैसे हो सकता है? जो उपासना बृहत्तर रूप में सुख का आधार बनती है, सुख को प्राप्त कराने का कारण बनती है, तो वह उपासना यदि हमारे पास कम भी है, थोड़ी भी है तो भी हमारे सुख का तो अवश्य आधार बनती है। इसलिए परमेश्वर की उपासना संसार का सुख भी देती है। और परमेश्वर का सुख कैसे मिलता है, यह कई बार सोचने

का विषय बन जाता है कि क्या उपासना करते-करते किसी आदमी को बहुत बड़ा घर, प्रासाद मिल जाएगा? बहुत सारे साधन मिल जायेंगे या वायुयान मिल जायेगा? ऐसा सोचना गलत है क्योंकि इसमें कार्य कारण सम्बन्ध नहीं है। सुख का जो कार्य-कारण सम्बन्ध है वो इसमें घटित होना चाहिए। मुझे वस्तु से सुख मिलता है, पहले तो यह सोच ही गलत है, क्योंकि जिनके पास वस्तु है उन्हें दुःखी देखा जा सकता है। कोई बहुत स्वस्थ सम्पन्न होकर दुःखी है, सन्तान वाला होकर भी दुःखी है, विवाह करके दुःखी, बिना विवाह किए दुःखी है। कोई न होने से दुःखी है और कोई होने पर भी दुःखी है। तो यह जो सोच है कि वस्तु से सुख का सम्बन्ध है यह विपरीत या गलत सिद्ध हो जाता है। तो सुख का सम्बन्ध वस्तु से बहुत सीमित समय तक रहता है। बहुत थोड़े समय तक रहता है। जब हम असुविधा में रहते हैं, हम शारीरिक दृष्टि से अभाव में रहते हैं, वहाँ तक तो संसार की वस्तुएँ हमें सुख दे देती हैं। हम भूखे हैं और इसलिए दुःखी हैं, तो निश्चित रूप से इसमें उपासना से कोई सुख नहीं मिलने वाला। भोजन करने से ही इसमें सुख की उपलब्धि हो सकती है। तो जो सुख हमें मिलना है वो भोजन से मिलेगा। लेकिन यदि मैं यह समझूँ कि मुझे भोजन से ही सुख मिलेगा तो मैं भोजन करने के बाद भी भोजन करूँगा तो क्या मुझे सुख की प्राप्ति होगी? मेरे पैर में चोट है, तो क्या मैं भोजन करके इस दुःख को मिटा दूँगा? ऐसा नहीं है। जो सुख वस्तु से मिलता है वो शरीर के स्तर पर मिलता है। सर्दी लग रही थी, मुझे कम्बल मिल गया, मेरा दुःख दूर हो गया। लेकिन कम्बल मिलने से यदि मेरे अन्दर शोक है तो वह दूर नहीं होता। कम्बल से मेरा अज्ञान दूर नहीं होता। तो अन्दर का जो सुख है वो जिससे मिलता है और जिसके पास है, वो उपासना से मिलता है, तो उसके पास होने वाला सुख भी उपासना से मिलेगा, क्योंकि उपासना सुख का उपाय है, सुख का साधन है। सुख प्राप्ति के लिए सुख का समुदाय, संग्रह जिसके पास है, जो सुख स्वरूप है, उसके पास जाकर हम सुख का अनुभव करते हैं। वो मार्ग हमें सदा ही सुख

देता है इसलिए ऋषि ने लिखा, सब सुखों का मूल उपासना है। हम बुद्धिपूर्वक उपासना करते हैं तो उससे हमें सुख की प्राप्ति होती है।

ऋषि दयानन्द उपासना की आवश्यकता बताते हुए सत्यार्थप्रकाश में एक स्थान पर लिखते हैं कि उपासना का जो वास्तविक लाभ है वो तो भिन्न है, अनुभव का विषय है, उसे पाए बिना कोई उसकी कल्पना नहीं कर सकता लेकिन फिर भी उपासना से यह लाभ है कि पर्वत के समान दुःख आने पर भी मनुष्य विचलित नहीं होता। उसके मन में तिल भर भी परेशानी पैदा नहीं होती, क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि आपके पास प्रार्थना करने से, उपासना करने से दुःख न आयें। दुःख न आयें यह वो परिस्थिति हो सकती है जो कर्म मैंने किए ही नहीं हैं और उपासना के कारण मैं करूँगा भी नहीं कि वे अशुद्ध हैं, इसलिए वे दुःख मुझे प्राप्त नहीं होंगे, यह बात तो उपासना से बनेगी। किन्तु जो चीज मैं कर चुका हूँ, उसे उपासना से कैसे टाल सकता हूँ?

अपने यहाँ कर्म की चर्चा करते हुए योगदर्शन में एक बात कही गयी है कि हमारे पास जो कर्म संग्रह में हैं और जो कर्म हम कर रहे हैं और जो कर्म आगे होने वाले हैं, इनमें बचाव जो कर रहे हैं और करने वाले हैं उनमें तो हो सकता है, लेकिन जो हम कर चुके हैं उनमें नहीं हो सकता। इसी तरह से जो हम कर्म कर चुके हैं या तो उनका फल भोगा जा चुका है या उनका फल भोगना अभी शेष है या भोग रहे हैं। तो शास्त्र कहता है जिन कर्मों का फल अभी भोग रहे हैं, उनसे तो हम केवल जीवन मुक्त की दशा में, अर्थात् जब हम योगी बन चुकते हैं, अपने चित्त को समाप्त कर चुकते हैं, दग्धबीज जिसे कहा जाता है। वो जो परिस्थिति है वो जीवन-मुक्त की है। वह उसी को प्राप्त होती है जो मुक्ति का अधिकारी बन जाता है। उससे पहले हमारे कर्म नष्ट हो जाएँ यह सम्भव नहीं है। इसलिए जो कर्म हमने किए हैं, उनका फल तो हमें भोगना ही पड़ता है। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। न अभुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटिः शतैरपि।

हमने चाहे शुभ कर्म किया है, चाहे अशुभ कर्म किया है उन दोनों का फल निश्चित रूप से हमें प्राप्त होगा। फिर उपासना करने से क्या होगा? उपासना करने से यह होगा कि जिस चीज का हमें पता नहीं है, वो कष्ट हमारे ऊपर आ गया है तो पहली बात जो हमारे अन्दर पैदा होगी वह यह कि जो कुछ हमें मिला है— वह अच्छा-बुरा मिला है तो भी मेरे परिश्रम का, कर्मों का फल है। मेरा फल जब मुझे मिल रहा है तो मेरे मन में एक धारणा यह भी हो सकती है कि मुझे व्यर्थ में दुःख दिया जा रहा है। जैसा प्रायः हम लोगों को कहते देखते हैं कि हमने तो किसी का बुरा किया नहीं, फिर भी हमारे साथ बुरा हो रहा है, भगवान् हमारे साथ बुरा करता है। ऐसी बहुत सारी बातें मनुष्य करता है। यदि वह उपासक है, उपासना करता है, परमेश्वर में उसकी आस्था है तो सबसे पहले तो जो कुछ उसके साथ घटित हो रहा है, उसको यह विश्वास होता है कि यह मेरे किए का परिणाम है, फल है। जो कुछ मैं भोग रहा हूँ वह उसे भोगकर समाप्त करने का इच्छुक होता है। वह यह जानता है कि यदि किसी कारण से आत्महत्या कर अपने को बचा भी लूँगा तो भी मेरे किए का परिणाम अगले जन्म में भी भोगना पड़ेगा और आत्महत्या रूप एक और अपराध मेरे से हो जाएगा। ऐसी स्थिति में जब यह पता लगता है कि यह उसी का किया है तो उसके दुःख में अन्तर आ जाता है। जब वस्तु मुझसे छीन ली जाती है तब मुझे जो दुःख होता है और मेरी भूल से वह चीज छूट जाने पर आवश्यकता पड़ने पर न होने का जो कष्ट होता है, इन दोनों में अन्तर है।

जो दूसरे के द्वारा हुआ कष्ट है वह अधिक होता है। अकारण लगता है, उसके प्रति ईर्ष्या-द्वेष पैदा होता है। लेकिन स्वयं की गयी भूल के कष्ट के बारे में मनुष्य सावधान होना चाहता है। भविष्य में ऐसा न हो ऐसा उपाय करता है। इसलिए मनुष्य जब उपासना करता है तो उसके अन्दर होने वाले जो दुःख हैं उन दुःखों का अनुभव करते हुए वह परमेश्वर के प्रति आक्रोश प्रकट नहीं करता, अपने दुःख के लिए उसे उत्तरदायी नहीं

बनाता। वह उन्हें अपने कर्मों का परिणाम मानता है और उन्हें सहर्ष भोगता है। वह मान कर चलता है कि मैं इन्हें जितना जल्दी भोग लूँगा, उतना ऋण उतर जाएगा। मुझे अतिरिक्त फल पाने की आवश्यकता नहीं होगी। और इतना ही नहीं, उनको सहन करने का सामर्थ्य भी उसके अन्दर आ जाता है। वह जानता है कि परमेश्वर न्यायकारी है, वह कोई अनुचित कष्ट मुझे नहीं दे सकता तो उसके भोगने, सहन करने के लिए स्वयं को तैयार करता हूँ।

इसलिए ऋषि दयानन्द ने कहा— उपासना करने से मनुष्य को कष्ट सहने का सामर्थ्य प्राप्त होता है और वह पर्वत के समान भी यदि कष्ट में पड़ जाये तो वह उन कष्टों के सामने विचलित नहीं होता। हताश निराश नहीं होता। वह केवल इतना मानता है कि परमेश्वर न्यायकारी है और उसने जो भी कष्ट हमको दिए हैं, हमारे किसी कर्म का, पुराने जन्म के कार्य का फल है। उस फल को पाकर दुःखी नहीं होते, अपितु जल्दी से जल्दी उसका निराकरण चाहते हैं, भोगकर उसे समाप्त करना चाहते हैं। इसलिए कहा गया है कि मनुष्य यदि प्रतिदिन उपासना करे, परमेश्वर की सन्ध्या-भक्ति करे, तो ऐसा करने से उसके मन में बोध प्राप्त होता है कि यह कष्ट मुझे मेरे ही कर्म, मेरे ही अज्ञान से मिले हैं और परमेश्वर के प्रति प्रार्थी बनता है और दोबारा ऐसे कार्यों को न करूँ। ऐसे दोषों से अपने को बचाऊँ और ऐसा करने के लिए वर्तमान में कष्ट सहने का जो सामर्थ्य है वह परमेश्वर से माँगता है। प्रार्थना, श्रेष्ठता की माँग तो है ही, लेकिन कष्ट को सहने का सामर्थ्य भी है। अर्थात् परमेश्वर की व्यवस्था को स्वीकार करना। तो जैसे सुख को, पुरस्कार को प्राप्त कर व्यक्ति प्रसन्न होता है। वह समझता है परमेश्वर ने मुझे दिया है। जो परमेश्वर की व्यवस्था में विश्वास रखता है, उपासना में वह परमेश्वर द्वारा दिए दुःखों का भी धन्यवाद करता है। जो दुःख प्राप्त हुए हैं वह भी परमेश्वर की कृपा से जल्दी समाप्त हो जायेंगे और प्रार्थना से उन्हें सहने का बल प्राप्त करेगा। इसलिए उपासना हमारे लिए सुख का मूल है।

ऋग्वेद में शरीर रचना, रोगों का कारण एवं निवारण

पं. शिवनारायण

ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है, इस तथ्य को संसार के सभी विद्वानों ने स्वीकार कर लिया है। चारों वेदों में भी ऋग्वेद की महत्ता इसलिए भी अधिक है, क्योंकि चारों वेदों की कुल ऋचाओं का इक्यावन प्रतिशत भाग इसी में स्थान प्राप्त कर रहा है। फिर इसमें पचासों विषयों पर चिन्तन हुआ है, वास्तव में यह ज्ञान-विज्ञान का विशाल आलय है। मनुष्य जीवन का पहला सुख निरोगी काया माना जाता है। उस पर इस वेद में विस्तृत विचार किया गया है। मानव शरीर की रचना, उसकी कार्य प्रणाली, स्वस्थ रहने के नियम, रोगों के कारण तथा उनका निवारण आदि का विस्तृत वर्णन यहाँ पर देखा जा सकता है। हम इन्हीं विषयों पर ऋग्वेद के आधार पर विचार रहे हैं। ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १६३ में रोग के माध्यम से शरीर के विभिन्न अंगों का वर्णन किया गया है।

**अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते॥**

ऋ. १०.१६३.१

मैं वैद्य तेरी आंखों से रोग को दूर करता हूँ, तेरी नासिका से, तेरे कानों से और ठोड़ी से रोग को दूर करता हूँ। शिर में बैठे हुए रोग को, मस्तिष्क और तेरी जीभ से रोग को दूर करता हूँ।

इस विषय को अगली ऋचाओं में विस्तार दिया गया है।

हे रोगिन्! गर्दन की नाड़ियों से, ऊपर जाने वाली धमनियों से, हड्डियों से तथा संधि-भाग से रोग को दूर करता हूँ। बाहुओं में बैठे यक्ष्म रोग को, तेरे कन्धों से रोग को दूर करता हूँ।^१

हे रोगिन्! तेरी आंतों से, गुदाओं से, स्थूल आंत से, हृदय से तेरे दोनों गुदों से, यकृत से, तिल्ली आदि से रोग

को दूर करता हूँ।^२

तेरी जंघाओं से, विशेष अस्थि वाले गोडों से, एड़ियों से, पंजों से, नितम्ब भागों से, कटि भाग में स्थित उपस्थ प्रदेश से रोग को दूर करता हूँ।^३

हे रोगिन्! तेरी मूत्र पैदा करने वाले मूत्रेन्द्रिय से, लोमों से, तेरे नखों से, तेरे सारे शरीर से, तेरे उस-इस यक्ष्म को दूर करता हूँ।^४

अंग-अंग से, लोम-लोम से और पोर-पोर में पैदा हुए इस यक्ष्मा को समस्त देह से दूर करता हूँ।^५

शरीर का सञ्चालन मस्तिष्क से होता है इस विषय में कहा गया है- 'तू ही मस्तिष्क से आदेश प्रेरणा आदि का आकर्षण करने वाली और शारीरिक अनुभूति को लेकर मस्तिष्क में आरोहण करने वाली कुटिल गामिनी-टेढ़ी मेढ़ी चलती वातनाड़ियों में उष्ण तरल पदार्थ को धारण कराता है।'^६

शारीरिक क्रियाएँ वातनाड़ियों द्वारा उत्पन्न होती हैं। इनके भीतर एक तरल पदार्थ और ऊपर सूत्र तन्तु होता है। प्रत्येक तन्तु के दो सिरे होते हैं- एक सिरा मस्तिष्क में और दूसरा सिरा भिन्न-भिन्न अंगों में होता है। ये दो प्रकार के होते हैं। एक के द्वारा इन्द्रियों की अनुभूति मस्तिष्क तक पहुँचती है और दूसरे प्रकार के सूत्रों द्वारा मस्तिष्क की प्रेरणाएँ अंगों तक पहुँचती हैं। उष्ण-तरल पदार्थ इनके जीवित होने का लक्षण है। इस प्रकार मस्तिष्क ही, इन दो प्रकार के वात सूत्रों द्वारा शरीर के चैतन्यता का धारक बना रहता है।

अगले मंत्र में, मस्तिष्क सभी अंगों को इतना बल देता है कि कुटिल भावनाएँ अथवा दुर्बलता, रोग आदि उपसर्ग उनको पीड़ित न करें।

'अनन्तर जब सभी दिव्य अङ्ग सर्पवत् कुटिल भावना की प्रचण्डताओं को लांघ जाते हैं, उन पर विजय प्राप्त

कर लेते हैं, तब तू उनको शिकार करने वाले पशु का बल प्रदान कर देता है।^{१७}

अब हम शरीर में रोगों की उत्पत्ति के विषय में विचार करते हैं। रोगों की उत्पत्ति के कई कारणों में से एक रोगाणुओं द्वारा शरीर में प्रवेश कर जाना भी है। यदि हम रोगाणुओं से अपने को बचा सकें तो रोगी होने से भी बच जायेंगे। रोगाणुओं को नष्ट करने में प्राकृतिक शक्तियों का भी बड़ा हाथ होता है। सूर्य की धूप तथा यज्ञ का धुआँ भी इन कृमियों को नष्ट करता रहता है। बिजली की कड़क से भी यह नष्ट हो जाते हैं।

‘जो विद्युत् पदार्थ, गर्जन-तर्जन आदि कड़क से अस्पष्ट वाणी वाले, हिंसक आवाज वाले, बहुत से अत्यधिक अकल्याणकारी जन्तुओं को नष्ट कर देता है, जो पिता के समान जगत् की शक्ति और बल को बढ़ाता है, इस इन्द्र के उस उस बल की हम प्रशंसा करते हैं।’^{१८}

‘जल भी कई रोगों को दूर भगाने में सहायक होता है। वेद का कथन है, जल निश्चय ही भेषज रूप है। जल रोगों को दूर करने वाला है। जल सब प्राणियों की भेषज भूत है। अतः वे जल तुझ रोगी का इलाज करें।’^{१९}

‘अब हम प्रसूति विज्ञान तथा गर्भवती स्त्रियों की देखभाल पर विचार करते हैं। विवाह से पूर्व कन्या को शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ होना चाहिए। इस विषय पर वेद का कथन है, पति द्वारा वरण को स्वीकार करती हुई कन्या जो शारीरिक दृष्टि से निचुड़ गई हो वह सोमलता आदि औषधियों के रोग नाशक रस को निश्चय ही प्राप्त करे और प्राप्त करके घर आती हुई उस रस के प्रति मन ही मन यह कहे, कि तुझ सोम को मैं रोगादि दुःख निवारकता के लिए निष्पादित करती हूँ, समर्थ होने के लिए सम्पादित करती हूँ।’^{२०}

‘विवाह के उपरान्त जब वधू पति-गृह में आ जाती है और उसे समय पर मासिक धर्म होता रहता है, उस समय मासिक धर्म के बाद उसकी इच्छा गर्भधारण करने

की होने लगती है।

‘कन्या में विद्यमान अग्नि की उष्मा तब आयु वर्चस्व के साथ पत्नी पति को प्रदान करती है, इसका जो पति है वह लम्बी आयु वाला होकर शरद् ऋतुओं का दर्शन करता हुआ जीवे।’^{२१}

‘हे वीर्य सेचन करने वाले शक्तिशाली वर! सौभाग्यशालिनी इस वधू को तू उत्तम पुत्रों वाली कर। इसमें दश पुत्रों को पैदा कर। ग्यारहवां तुझ पति को कर। अर्थात् दश के अधिक सन्तान उत्पन्न मत कर।’^{२२}

वर्तमान में तो जनसंख्या बहुत बढ़ गई है अतः 2 से अधिक सन्तान उत्पन्न करने की सोच होनी चाहिए।

‘हे दश महीनों में उत्पन्न हुए शिशु! जिस प्रकार से वायु, जिस प्रकार से जङ्गल, जिस प्रकार से समुद्र कम्पित होता अथवा चलता है वैसे तुम देह के ढाँपने वाले के सहित आइये अर्थात् जरायु सहित बाहर आइये।’^{२३}

‘हे मनुष्यो! जो प्राण आदि का धारण करने वाला, ऊपर माता में दश महीनों तक शयन करता हुआ, घाव से रहित बालक बाहर निकले वह जीव जीवती हुई के ऊपर जीवता है।’^{२४}

‘गर्भावस्था के समय वधू को अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था में यदि उसे कोई रोग हो जाये तो योग्य वैद्य को बतावे।’

‘हे स्त्री! तेरे गर्भ और योनि में जो अमीबा कृमि और दुर्णामा कृमि स्थित हैं, यह आग्नेय औषध वेद प्रतिपादित प्रयोग के साथ उस कच्चा मांस खाने वाले जन्तु का निःशेष रूप से नाश करे।’^{२५}

फिर इस विषय पर आगे कहा गया है, ‘हे स्त्री! जो तेरे गर्भाशय में रेतस् रूप में जाते हुए का नाश करता है जो सर्पणशील गर्भ को नष्ट करता है, तेरे गर्भस्थ शिशु को जो मार देता है, उसको इसमें से मैं वैद्य नष्ट कर देता हूँ।’^{२६}

आगे पुनः इसी विषय पर कहा गया है, ‘हे स्त्री! ये जो तेरे जाघों के बीच में घूमता है तथा पति और पत्नी में

से किसी एक के अन्दर देह में रहता है तथा जो योनि के अन्दर रहकर गर्भ को चाट जाता है उसको यहाँ से मैं नष्ट करता हूँ।^{१७}

इसी विषय में आगे कहा गया है—

‘हे स्त्री! जो जन्तु भ्राता होकर, पति होकर अथवा जार होकर तुझे प्राप्त होता है जो तेरी सन्तति को नष्ट करता है उसको यहाँ से हम वैद्य जन नष्ट करते हैं।’^{१८}

जितने रोग हैं उतनी ही उनकी औषधियाँ भी हैं। हमें उनको जान कर रोगों से छुटकारा पाना चाहिए। वेद में कहा गया है, ‘इन मातृभूत औषधियों के सौ नाम और प्रयोग के प्रकार एवं स्थान हैं। इनके हजारों प्ररोह हैं। ये सैंकड़ों कर्म करने वाली हैं। ये मेरे रोगी को रोग रहित कर देती हैं।’^{१९}

फिर आगे कहा गया है, ‘औषधियाँ मातृभूत और दीपन द्योतन आदि गुणों वाली हैं। इस प्रकार मैं वैद्य इनके प्रभाव को बताता हूँ। इन्द्रियाँ, नाड़ी, नस, रक्त, हृदय के प्रति हे रोगी मैं इन्हें देता हूँ।’^{२०}

औषधियाँ, रोग पर इस प्रकार अतिक्रमण करती हैं जैसे चोर पक्षियों पर अतिक्रमण करते हैं— ‘पथिक समूह पर चोर के समान, देह में सर्वत्र व्याप्त हुई औषधियाँ रोग समूह पर आक्रमण करती हैं और जो कुछ शरीर का दूषण है उसे देह से दूर कर देती हैं।’^{२१}

अधिकतर रोगी को दो-तीन औषधियाँ एक साथ दी जाती हैं। इस पर कहा गया है, ‘इन औषधियों में अन्यतम दूसरी औषधियों के प्रभाव को सुरक्षित रखती है। एक दूसरी एक दूसरी के समीप रहती है। वे सभी औषधियाँ परस्पर मिली हुई मुझ वैद्य के इस वचन की रक्षा करती हैं।’^{२२}

अलग-अलग औषधि का अलग-अलग प्रभाव होता है इस पर कहा गया है, ‘जो औषधियाँ चन्द्रमा के प्रभाव वाली हैं और पृथ्वी पर स्थित हैं वे योग्य वैद्य से निर्मित की गई इस रुग्ण शरीर के लिए बल को धारण

करती हैं।’^{२३}

विद्वान् वैद्य, रोगी को मृत्यु के मुँह से भी छुड़ा लाता है। ‘यदि रोगी नष्ट जीवन शक्ति वाला हो गया है अथवा सीमा से पार चला गया है। यदि मृत्यु के समीप पहुँच गया है तो भी उस रोगी को मैं वैद्य कष्टप्रद रोग के पंजे से छुड़ा लाता हूँ। उसे सौ शरद् ऋतुओं तक जीने के लिए बल युक्त कर देता हूँ।’^{२४}

वेद में कई बलवर्द्धक औषधियों का भी वर्णन हुआ है। ‘मैं वैद्य अति बलवाली, लतामयी इन औषधियों को खोद कर लाया हूँ, जिसके द्वारा इसका सेवन करने वाली, जिसके द्वारा पति को अधिक देर तक आसक्त कर रोक सकती है।’^{२५}

इसी प्रकार पाठा औषधि की शक्ति का वर्णन इस प्रकार किया गया है, ‘इस उत्कृष्ट पाठ औषधि के सेवन से मैं स्त्री उत्कृष्टतरा तथा उत्कृष्टतरा स्त्रियों से भी उत्कृष्टतम हो जाऊँ और जो मेरी सौत है वह निकृष्टों से भी निकृष्ट हो जावे।’^{२६}

ऋग्वेद में किसी कारण से दुर्घटना में टांग टूट जाये उसके निदान का भी वर्णन है। ‘युद्ध में या खेल के कारण या बीमारी में चलने का साधन, पैर ही निश्चय से टूट गया है। हे चिकित्सकों! तत्काल भागने या भगाने के लिए युद्ध या साधन के लिए हित साधन के कार्य में चलने के लिए लोह की बनी जङ्घा फिर से लगा दें पक्षी के पंख की तरह।’^{२७}

अब हम विष चिकित्सा पर ऋग्वेद के विचार प्रस्तुत करते हैं। ‘हे विष के भय से डरने वाले जन। जो इतने विशेष देश में हुई कपिञ्जल पक्षी है वह तेरे विष को खा लेती है। वह भी नहीं मरती और न हम लोग मारे जा सकें और इन पक्षी के संयोग से विष का योग (प्रभाव) दूर हो जाता है।’^{२८}

इसी प्रकार शकुन्तिका नामक चिड़ियाँ भी विष के प्रभाव को दूर कर देती हैं। ‘जो इक्कीस प्रकार की छोटी-छोटी चिड़ियाँ विष के पुष्ट होने योग्य पुष्प को

खाती हैं। वह भी शीघ्र नहीं मरती हैं और हम लोग भी न मारे जावें और इनके संयोग से विष का प्रभाव दूर हो जाता है।^{१९}

इसके अगले मंत्र में ९९ प्रकार के विष हरण की बात कही गई है। कुछ मोरनियां भी विष हरण का कार्य करती हैं। कुछ वैद्य रत्नों के द्वारा भी विष चिकित्सा करते हैं। 'जो मैला कुचेला छोटा सा नकुल विष युक्त उस दुष्ट को विष हरने वाले पत्थर से मैं अलग करता हूँ। इस कारण उस विष को छोड़ विभाग वाली जो पूरे दूर प्राप्त होती उन दिशाओं को पीछे लखि प्रवृत्त होता है उनसे भी निकल जाता है।'^{२०}

छोटा नेवला भी विष हरण में सहायक होता है। 'पर्वत से प्रवृत्त हुआ, छोटा नेवला बहछी के विष को निरस जो कहता अर्थात् चेष्टा से दूसरों को जताता है। इस कारण हे अंगों को छेदने वाले प्राणी तेरे में अरस विष है।'^{२१}

सन्दर्भ स्थल

१. ऋग्वेद १०.१६३.२
२. ऋग्वेद १०.१६३.३
३. ऋग्वेद १०.१६३.४
४. ऋग्वेद १०.१६३.५
५. ऋग्वेद १०.१६३.६
६. ऋग्वेद ८.९३.१३
७. ऋग्वेद ८.९३.१४
८. ऋग्वेद १०.२३.५

९. ऋग्वेद १०.१३७.६
१०. ऋग्वेद ८.९१.१
११. ऋग्वेद १०.८५.३९
१२. ऋग्वेद १०.८५.४५
१३. ऋग्वेद ५.७८.८
१४. ऋग्वेद ५.७८.९
१५. ऋग्वेद १०.१६२.२
१६. ऋग्वेद १०.१६२.३
१७. ऋग्वेद १०.१६२.४
१८. ऋग्वेद १०.१६२.५
१९. ऋग्वेद १०.९७.२
२०. ऋग्वेद १०.९७.४
२१. ऋग्वेद १०.९७.१०
२२. ऋग्वेद १०.९७.१४
२३. ऋग्वेद १०.९७.१९
२४. ऋग्वेद १०.१६१.२
२५. ऋग्वेद १०.१४५.१
२६. ऋग्वेद १०.१४५.३
२७. ऋग्वेद १.११६.१५
२८. ऋग्वेद १.१११.११
२९. ऋग्वेद १.१११.१२
३०. ऋग्वेद १.१११.१५
३१. ऋग्वेद १.१११.१६

७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा
(राजस्थान)-३२४००९

लोकोत्तर धर्मवीर

मुख्य लेखक - से.नि. आई.ए.एस.

अनुवादक - श्री बीरेन्द्र कर लिंगिपुर, सेसादरी नगर, भूवनेश्वर, डी.टी.पी. कालेकर साहू

श्री बीरेन्द्र कर जी ने अपने अथक प्रयास एवं उड़िया भाषा में पुस्तिका का कलेवर कर एक नई जागृति पैदा की है। श्री धर्मवीर जी के पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उड़िया में लेखबद्ध एक नई क्रान्ति की लहर एवं पाठकों के समक्ष श्री धर्मवीर जी का जीवन प्रस्तुत किया है। आपका साधुवाद।

- देवमुनि

स्थापना शताब्दी और आर्यसमाज की उन्नति

आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

टिप्पणी : पण्डित धर्मदेव विद्यामार्तण्ड का यह लेख आर्यसमाज काकडवाडी मुम्बई की स्थापना शताब्दी (१८७५-१९७५) के अवसर पर प्रकाशित स्मृति ग्रन्थ से साभार यथावत् पुनर्मुद्रित किया जा रहा है- सम्पादक।

आजकल सभी प्रांतों में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी की, जो १२ अप्रैल १९७५ को प्रत्येक नगर और ग्राम में जहाँ आर्यजन निवास करते हैं सोत्साह मनाई जानी है और फिर २४ से २८ दिसम्बर १९७५ तक बम्बई में तथा १९७६ में देहली में मनाई जानी है, गुंज है। उत्तर प्रदेश में मेरठ और कानपुर में शताब्दी समारोह के रूप में दो बड़े सम्मेलन किये जा चुके हैं और गोरखपुर में उसकी तैयारी है। पंजाब में अमृतसर और लुधियाना में दो बड़े आर्य सम्मेलन हो चुके हैं और मई में आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से यमुनानगर (अम्बाला) में आर्य सम्मेलन बड़ी मात्रा में होने वाला है। हैदराबाद में भी मई में ऐसा बड़ा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इन सम्मेलनों से जनता में जागृति अवश्य आती है और इनकी अपनी उपादेयता है। किन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इन पर धन-जनशक्ति का जितना व्यय होता है उसकी तुलना में लाभ कम होता है। सम्मेलनों में धुआंधार भाषण हो जाते हैं और अनेक प्रस्ताव पारित कर दिये जाते हैं परन्तु प्रायः उन प्रस्तावों को क्रियात्मक रूप नहीं दिया जाता। अतः वैयक्तिक, पारिवारिक वा सामाजिक जीवन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होने पाता। उत्तम साहित्य निर्माण, परिवारों के वैदिकीकरण तथा अन्य ठोस कार्यक्रम की ओर अब भी आर्यजनता का ध्यान कम है अतः आर्यसमाजों की वर्तमान अवस्था सन्तोषजनक नहीं है। आर्यसमाज की वास्तविक उन्नति के लिये दशसूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत करने से पूर्व में आर्यजनता का ध्यान अमर धर्मवीर स्वा. श्रद्धानन्द जी महाराज के निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण सन्देश की ओर आकृष्ट करना अपना कर्तव्य

समझता हूँ जो उन्होंने मेरी प्रार्थना पर २१-०५-१९२४ को मेरे द्वारा भेजा था। उस सन्देश में श्रद्धेय स्वामी जी ने आर्यों को सम्बोधित करते हुए लिखा था- “तुम यह मत भूलो की वैदिक धर्म कोई सम्प्रदाय या पन्थ नहीं है। यह वह सत्य सनातन धर्म है जिसके बिना संसार की सामाजिक व्यवस्था एक पल भी नहीं रह सकती। प्राचीन काल में असंख्यात आध्यात्मिक कोषों को खोलने वाली चाबी तुम्हारे हाथों में दी गई थी और अब भी अशान्त संसार को शान्ति देना तुम्हारा ही काम है। आज गम्भीर भाव से प्रतिज्ञा करो कि (क) तुम दैनिक पंच महायज्ञों के अनुष्ठान में प्रमाद न करोगे (ख) तुम अस्वाभाविक जातिभेद के बन्धन को तोड़ कर वर्णाश्रम व्यवस्था को अपने जीवन में परिणत करोगे (ग) तुम अस्पृश्यता के कलंक का समूल नाश कर दोगे और तुम आर्यसमाज के सार्वभौम मन्दिर का द्वार, मत, सम्प्रदाय, जाति और रंग आदि के भेदभाव का कुछ भी विचार न करके मनुष्यमात्र के लिये खोल दोगे। परम पुरुष परमात्मा इस गम्भीर प्रतिज्ञा के पालन में तुम्हारे सहायक हों।”

मैं इस सन्देश को आर्यसमाज की वास्तविक उन्नति का मूल मन्त्र समझता हूँ। इसे तथा आर्यसमाज की वर्तमान असन्तोषजनक अवस्था को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित कार्यक्रम उसको उन्नत करने के लिए प्रस्तुत करता हूँ -

(१) आर्यों को अपना वैयक्तिक जीवन वैदिक आदर्शों के अनुकूल सर्वदा सत्यमय और प्रेममय बनाने का अधिकतम प्रयत्न करना चाहिये जिससे वे अपने पवित्र जीवन द्वारा अपने सम्पर्क में आनेवाले लोगों को

भी पवित्र और उन्नत कर सकें। उन्हें अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिये प्रतिदिन दोनों समय सन्ध्योपासना, कम से कम एक समय सपरिवार हवन तथा वेदों का स्वाध्याय श्रद्धापूर्वक अवश्य ही करना चाहिये।

आर्यों के जीवन में तर्क के साथ श्रद्धा का पूर्ण समन्वय होना चाहिये जिसकी न्यूनता प्रायः देखने में आती है।

(२) पारिवारिक जीवन को आर्य बनाना अत्यावश्यक है क्योंकि महिलाओं के हार्दिक सहयोग के बिना वैदिक धर्म का प्रचार और आर्यसमाज की उन्नति सर्वथा असम्भव है। यज्ञों और संस्कारों के द्वारा जब वे श्रद्धापूर्वक और आवश्यक व्याख्या सहित किये जाये, वैदिक धर्म के प्रचार में अत्यधिक सहायता मिलती है, क्योंकि उनमें सर्वसाधारण आस्तिक जनता की श्रद्धा अब तक बनी हुई है।

पारिवारिक सत्संगों का आयोजन और आर्यसमाज के सत्संगों के अतिरिक्त जिनमें आर्य सदस्यों को सपरिवार जाने का ही यथासम्भव प्रयत्न करना चाहिये आर्य महिला समाजों के द्वारा महिलाओं में विशेष प्रचार जो संगीत रोचक कथादि द्वारा उत्तमतया हो सकता है, इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होंगे। संस्कार शुद्ध रीति से श्रद्धा से किये जाने चाहिये जिनमें अवैदिक प्रथाओं का समावेश न हो।

(३) कुमार-कुमारियों और युवक-युवतियों में उत्तम प्रचार के बिना आर्यसमाज का कार्य आगे नहीं बढ़ सकता। इसके लिये आर्यकुमार आर्ययुवक सभाओं को आर्यसमाजों की ओर से प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये और उन सभाओं को भी आर्यसमाज के कार्य में पूर्ण हार्दिक सहयोग देश चाहिये।

आर्य कुमारी सभाओं और आर्य महिला सभाओं की स्थापना भी महिलाओं में विदुषी देवियों द्वारा प्रचार के लिये उपयोगी है। इन सब को आर्यसमाज के साप्ताहिक तथा अन्य सत्संगों और विशेष समारोहों में भी आने की

प्रेरणा करनी चाहिये। आजकल के युवक-युवतियों में विलासिता, मद्यमांस धूम्रपान आदि की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। आर्य कुमार और युवक समाजों द्वारा इन निन्दनीय प्रवृत्तियों को रोकने का विशेष यत्न करना चाहिये। इसी प्रकार आर्यवीर दल को भी अधिक शक्तिशाली और उपयोगी बनाने की आवश्यकता है। आर्यसमाजों और आर्य कुमार सभाओं का सम्बन्ध पिता पुत्र का सम्बन्ध होना चाहिये न कि प्रतिद्वन्द्वियों का जैसा कि दुर्भाग्यवश कई स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है।

(४) आर्यों के सामाजिक जीवन को भी वैदिक आदर्शानुकूल बनाना आर्यसमाज की उन्नति के लिये नितान्त आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। समाज के साप्ताहिक सत्संगों के अन्त में ऋग्वेद के १०१९१ के मन्त्रों का पाठ करने की (जिसे संगठन सूक्त के नाम से पुकारा जाता है) पद्धति प्रचलित है। जिसमें

“संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥”

इत्यदि मन्त्रों द्वारा मिलकर प्रेम से बोलते, चलने, समान व्यवहार करने तथा मनो और हृदयों को मिलाकर पूर्ण सहयोग से कार्य करने का आदेश है। किन्तु इस पर आये लोग कहाँ तक व्यवहार करते हैं यह आर्यसमाज की आन्तरिक अवस्था जानने वाले सब जानते हैं जैसे कि पूज्य स्वा. आत्मानन्द जी सरस्वती ने लिखा कि “शायद ही कोई भाग्यशाली आर्यसमाज होगा जिसमें दो पार्टियाँ न हो।” आर्यसमाज ही नहीं आर्य प्रतिनिधि सभाओं तक के दो बराबर विरोधी संगठन कई प्रान्तों में बन गये हैं। शताब्दी समारोह की एक बड़ी सफलता यह होगी कि जहाँ आर्यसमाजों का आर्य प्रतिनिधि सभाओं से परस्पर विरोध है उनका निर्णय सरकारी न्यायालयों द्वारा नहीं अपितु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं द्वारा निर्धारित न्यायार्थ सभा

द्वारा कराया जाय। इस दिशा में तत्काल गम्भीर प्रयत्न किया जाना चाहिये ताकि सब आर्य नर-नारी मिलकर शताब्दी समारोह को मना सकें। जो आर्य पारस्परिक विवाद के निपटाने के लिये अदालत की शरण में जावें उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाये और उसे आर्यसमाज की सदस्यता से भी पृथक् कर दिया जाय। जहाँ न्यायाय सभायें न हों-आर्यसमाज में इस समय बड़े-बड़े न्यायाधीश, वीतराग संन्यासी तथा परमविद्वान् तपस्वी वानप्रस्थ विद्वान् विद्यमान हैं, उनके द्वारा इन विवादों का निपटारा कराया जाना चाहिये। आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी उन्हीं सुयोग्य पूर्ण सदाचारी सन्ध्या हवन स्वाध्याय आदि का श्रद्धापूर्वक सपरिवार आचरण करने वाले व्यक्तियों को बनाया जाये जो अपना अधिक से अधिक समय सामाजिक कार्यों के लिये दे सकें।

(५) वैदिक धर्म का प्रचार आर्यसमाज की विशेषता है अतः आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा के कार्यक्रम में उसको प्राथमिकता और मुख्यता देनी चाहिये किन्तु संस्थाओं के चक्कर में इस ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। आर्यसमाजों के विद्यालयों में भी धर्मशिक्षा का प्रायः अभाव है या वह बिल्कुल नाममात्र है। सुयोग्य प्रचारकों द्वारा जिनको अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखा जाना चाहिये, वैदिक धर्म के सब क्षेत्रों में व्यापक प्रचार की व्यवस्था अत्यावश्यक है। प्रचारक की उत्तरदायिता बड़ी भारी होती है, क्योंकि इसे जनता का चरित्र निर्माण करना है अतः वेदों के अच्छे मननशील विद्वान्, पूर्ण सदाचारी, अनुभवी महानुभावों को ही प्रचारक पद पर नियुक्त करना चाहिये। ऐसे ही सर्वसाधारण में प्रचारार्थ वैदिक सिद्धान्त और संगीत शास्त्र के ज्ञाता सज्जनों की भजनों के रूप में नियुक्ति करनी चाहिये। विदेशों में प्रचार की भी अत्युत्तम व्यवस्था करनी चाहिये।

(६) यथासम्भव प्रत्येक आर्यसमाज में एक गम्भीर विद्वान्पूर्ण सदाचारी प्रभावशाली वैदिक धर्म के प्रचार

की लगन वाले, महानुभाव की पुरोहित के रूप में नियुक्ति कर के उसे मार्गदर्शक के रूप में मान देना चाहिये। पुरोहित का अर्थ हो 'पुर एवं दधति' अर्थात् जिसको प्रत्येक कार्य में आगे रक्खा जाय यह है किन्तु दुर्भाग्य अनेक आर्यसमाजों के अधिकारी पुरोहित को समाज का भृत्य वा सेवक समझते और उसे उचित मान नहीं देते। यह अनुचित बात है। पुरोहित महानुभावों को भी इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि परिवारों के सब लोग, सन्ध्या, हवन स्वाध्यायादि नियमपूर्वक करें तथा उनके बालक-बालिकाओं को धर्म की शिक्षा दी जाए। पुरोहितों का सबसे अधिक ध्यान लोगों के जीवन को सच्चे आर्य जीवन बनाने की ओर होना चाहिये जिसकी बड़ी कमी दिखाई देती है। तर्क के साथ श्रद्धा का पूरा समन्वय आर्यों में हो इसका पूरा प्रयत्न उन्हें करना चाहिये।

(७) मौखिक प्रचार की अपेक्षा भी उत्तम साहित्य निर्माण और इसके प्रकाशन की व्यवस्था प्रचार दृष्टि से अत्यावश्यक है, उच्च सुशिक्षित विद्वानों के लिए, युवक-युवतियों के लिए, कुमार-कुमारियों, बालक-बालिकाओं के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के साहित्य की जो हिन्दी, संस्कृत, प्रादेशिक भाषाओं के अतिरिक्त देशविदेश के सुशिक्षित वर्ग के लाभार्थ अंग्रेजी तथा अन्य विदेशीय भाषाओं में भी हो, बड़ी भारी आवश्यकता है, उत्कृष्ट कोटि के साहित्य के बिना स्थायी प्रचार नितान्त असम्भव है, स्थापना शताब्दी के उपलक्ष्य में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा वेदों के भाषा भाष्य के प्रकाशन के अतिरिक्त अंग्रेजी में भी वेदभाष्य को करवा कर प्रकाशन करना चाहती है और ऋग्वेद के अंग्रेजी भाष्य का १०९६ पृष्ठों का प्रथम खण्ड छप भी चुका है।

(८) स्वशुद्धि और दलितोद्धार की ओर भी प्रचारकों को और आर्य प्रतिनिधि सभाओं को अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, पर जातिभेद और अस्पृश्यता के हटाये बिना यह सम्भव नहीं कि इन उक्त आन्दोलनों में सफलता मिल सके। अतः क्रियात्मक प्रचार की अति

विशेष आवश्यकता है ताकि शुद्धिशुद्ध व्यक्ति यह न अनुभव करें कि उनके लिए आर्यसमाज में भी कोई स्थान नहीं। किसी प्रकार के भेदभाव के बिना उनको अपने अन्दर पूर्णतया मिला लेना चाहिए, अन्तर्जातीय विवाहों को युवकों में अधिकाधिक प्रोत्साहित करना चाहिए।

(९) पाखण्ड-खण्डन तथा प्रेमपूर्वक शास्त्रार्थ-महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन की भी परवाह न करते हुए पाखण्ड का निर्दयता से खण्डन किया और हरिद्वार में कुम्भ के अवसर पर अत्यन्त प्रतिकूल, परिस्थिति में भी पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई, निर्भय होकर पौराणिकों, जैनियों, ईसाईयों और मुसलमानों से शास्त्रार्थ किये और विद्वान् भी बहुत समय तक इस परम्परा का अनुसरण करते रहे, इसका परिणाम यह होता था कि लोगों में विवेक शक्ति जागृत होती थी और मतमतान्तरों के लोग भी कुछ भयभीत रहते थे, सबने अपने मन्तव्यों की तर्कसंगत व्याख्या का यत्न किया था अब कुछ वर्षों से राष्ट्रीय एकता वा लोकप्रियता के नाम पर यह निर्भय पाखण्डखण्डन की प्रवृत्ति बहुत कम हो गई है जिसका परिणाम यह हो रहा है कि राधास्वामी सम्प्रदाय, ब्रह्मकुमारी सम्प्रदाय, बालयोगेश्वर का हंस मत, आनन्दमार्ग, रजनीश सम्प्रदाय, बाबा सत्यसाई सम्प्रदाय, निरंकारी मत आदि सम्प्रदाय बढ़ते जा रहे हैं और प्रतीत होता है कि कल्पित भगवानों की बाढ़ आ गई है। आर्य विद्वानों का कर्तव्य है कि इन मतों के ग्रन्थों का अनुशीलन करके उनकी विविध हानिकारक बातों का पत्र, पत्रिका, पुस्तकादि द्वारा खण्डन करे और उन्हें प्रेमपूर्वक शास्त्रार्थ के लिए भी ललकारें, ऐसे ही ईसाई, मुसलमान, जैनादि मतों की भी बुद्धिविरुद्ध बातों का निर्भयता से खण्डन करना चाहिए।

(१०) मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आर्यों में भी स्वदेश भक्ति की भावना कम हो रही है और पाश्चात्य वेशभूषा को लोग अपना रहे हैं, यज्ञों और संस्कारों में भी

बहुत बार मैंने यजमानों को पाश्चात्य वेशभूषा में देखा है। घरों में भी माता-पिता, चाचा-चाची के स्थान पर मम्मी, डैडी या पप्पा, अंकल, आण्टी आदि का प्रयोग फैशन समझा जाता है, इस अराष्ट्रीय प्रवृत्ति के विरुद्ध भी आर्य प्रचारकों को अति विशेष कार्य करने और सच्ची देश भक्ति और राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने की आवश्यकता है। संस्कृतनिष्ठ हिन्दी सचमुच राष्ट्रभाषा और संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में सर्वत्र पढ़ाया जाय और प्रोत्साहित किया जाय। इसके लिए भी आर्यप्रचारकों, आर्यसमाजों प्रतिनिधि सभाओं तथा सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को निरन्तर आन्दोलन करने की आवश्यकता है, वैदिक राजनैतिक आदर्शों को भी जनता में फैलाने तथा उनसे देश के राजनैतिक जीवन को पवित्र बनाने की बड़ी भारी आवश्यकता है। राजार्य सभा को यदि एक सुसंगठित शक्तिशाली सभा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के मार्ग-प्रदर्शनार्थ बनाया जा सके तो बहुत ही अच्छी बात होगी, यद्यपि यह खेद की बात है कि अब तक इसके विषय में अनेक प्रयत्न विशेष सफल नहीं हो सके, किसी अवस्था में जनसम्पर्क बढ़ाने के लिए भी यह आवश्यक है कि देश हित में गोवध निषेध, मद्य निवारण, भ्रष्टाचार निवारणादि आन्दोलनों को प्रबल रूप से संचालित किया जाय।

संकुचित प्रान्तीयता का परित्याग करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अन्तःराष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय की स्थापना, वेदों के देश विदेशों की भाषाओं में अनुवाद, सत्यार्थप्रकाश के सब भाषाओं में अनुवाद कराकर सर्वत्र प्रचार आदि योजनाओं को सफल बनाने के लिए सब आर्य नर-नारी पूर्ण नैतिक और आर्थिक सहयोग दे तो शताब्दी समारोह नवजीवन दायक और स्फूर्ति का संचारक बन सकता है। सर्वशक्तिमान् भगवान् सब प्रकार के भेद भुलाकर आर्यों को अपने कर्तव्यपालन की शक्ति प्रदान करें।

VEDA MARGAM 2025 INAUGURATED

Veda Margam 2025 a two year long program of Arya Samajam Kerala on the occasion of 200th birth anniversary celebrations of Maharshi Dayananda Saraswathi was formally inaugurated by senior Advocate Sri. Jairam (District Sanghachalak, R.S.S, Ottapalam district) by lighting Bhadradeepam at Karalmanna Veda Gurukulam at 10 p.m on 12 February 2023. The President of Perumbavoor Arya Samajam Sri. K. K. Jayan presided over the ceremony and Arya Pracharak and Adhishtatha of Veda Gurukulam Sri. K. M. Rajan Meemamsak presented the mission plan of Veda Margam 2025 project. Representatives from all districts of Kerala took part in this State level meeting and an action plan has been formulated to start active Arya Samajam units in all districts of Kerala by 2025. A committee has been formed at the state level for the successful implementation of *Veda Margam 2025 Project*.

Swami Sadswarupananda Saraswati, Panditaratnam Dr. P. K. Madhavan, Sri. V. Govinda Das Master (Patrons).

Sri. K. M. Rajan Meemamsak (President), Sri. K. K. Jayan (Vice President), Sri. Santhosh V. K (Chief Coordinator), K. Unnikrishnan, Sri. Shaji. P. P (Assistant Coordinators).

Coordinators and Assistant Coordinators were elected for all three zones (South, Central and Northern districts of Kerala). Coordinators for all districts were also elected. The formation of Satsang in various districts was discussed and decided to start shortly.

Dr. Vivek Arya (Delhi), Acharya Udayan Meemamsak (Acharya, Telangana Nigama Needam Veda Gurukulam) Sri. Subhash Duva (General Secretary, Bharatiya Hindu Shuddhi Sabha, Delhi), Sri. Baleshwar Muni (Patron, Veda Gurukulam) Sri. Aditya Muni (Patron, Veda Gurukulam), Acharya Vishwasravas (Acharya, Veda Gurukulam), Sri. T. N. Bhavadasan Namboothiri (Trustee, Karalmanna Tirumullapally Shiva Temple) delivered the blessing speech.

Inauguration of Kerala unit of Bharatiya Hindu Shuddhi Sabha was also held along with this.

<https://aryasamajkerala.org.in>

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रखें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

संस्था समाचार

आचार्य विद्यानन्द जी ने केन उपनिषद् के आधार पर कथानक के रूप में बताया कि जो दृश्य संसार है। इसके पीछे जो अदृश्य शक्ति परमात्मा है। जिसे हम देख नहीं पाते। इसको कैसे समझें? एक बार देवताओं को अपने विजय से बहुत ही अभिमान हो गया जब इस अभिमान का पता ईश्वर को लगा तो उन्होंने सोचा कि यदि देवताओं को अभिमान हो जाए तो वे निश्चित ही पतन को प्राप्त होंगे और फिर आसुरी शक्तियां प्रबल हो जाएगी। देवताओं के अभिमान को नाश करने के लिए वह एक यक्ष के रूप में देवताओं के सामने आए। देवता लोग उसे देखकर विचार करने लगे कि यह कौन है? आपस में विचार कर सर्वप्रथम अग्निदेव को उनके पास पता लगाने के लिए भेजा। अग्निदेव पास में गए और उनको पूछा आप कौन हैं? मैं जातवेद अग्नि हूं। मैं सभी को जला सकता हूं। उस यक्ष ने उनके सामने एक तिनका रख दिया और कहा कि आप इसको जला कर दिखाइए। अग्नि ने अपनी सारी शक्ति लगा दी पर उस तिनके को जला नहीं पाए। अग्निदेव वापस आ गए इसी तरह वायुदेव गए वायुदेव ने भी कहा कि मैं सब को उड़ा सकता हूं। उनके सामने भी यक्ष ने एक तिनका रखा और कहा कि आप इसे उड़ा कर दिखाए। वायुदेव उसे उड़ा नहीं सके वह भी वापस आ गए हैं। इस तरह और देवता भी वापस आ गए हैं। अन्त में देवताओं के राजा इन्द्र को उनके पास भेजा गया। इन्द्र के सामने आते ही वह यक्ष एक सुन्दर स्त्री के रूप में परिवर्तित हो जाता है। जिसका नाम उमा है। समझने की दृष्टि से उमा बुद्धि है। इन्द्र जीवात्मा है। बुद्धि से जीवात्मा संसार को और ईश्वर को जान सकता है। वह ईश्वर आँख का भी आँख है। कानों का भी कान है। घ्राण का भी घ्राण है। अर्थात् इन सभी इन्द्रियों में जो देखने, सुनने व सूँघने आदि का जो सामर्थ्य है, वह उस ईश्वर द्वारा दिया गया है।

महर्षि दयानन्द जी के जन्मदिन के अवसर पर मुनि सत्यजित् जी ने बताया कि महर्षि का पूरा जीवन सत्य के लिए रहा। वह सत्य की खोज में घर से निकलते हैं। पूरा जीवन सत्य के प्रचार के लिए लगाते हैं। उन्हें जो सत्य लगता है। उन सब को स्वीकार करते जाते हैं। इसीलिए उन्होंने वेद को भी परम प्रमाण माना है और वेद अनुकूल जो ग्रन्थ हैं उन्हें भी प्रमाण माना है। सत्य को समझने के लिए हम लोगों को पांच कसौटियां दी हैं। उन सभी कसौटियों को हमें ध्यान में रखना चाहिए। सभी चीजें वेद से प्रमाणित हो, यह जरूरी नहीं है। अतः महर्षि द्वारा बताए गए हमें अन्य प्रमाणों का भी प्रयोग करना चाहिए। कुछ लोगों का तर्क होता है कि हम उसी बात को मानेंगे जो वेद से प्रमाणित हो। अन्य प्रमाण को नहीं मानेंगे। इससे महर्षि के द्वारा जो दी गई पांच कसौटी है, उनका खण्डन होता है। ऋषि ने वेद के साथ-साथ अन्य प्रमाणों को भी माना है। हम भी यदि इन पांच कसौटियों को अपने जीवन व्यवहार में लाएंगे तो सत्य तक पहुंच सकते हैं। तथा सत्य रूपी ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं।

पूर्व सभा मन्त्री श्री ओम् मुनि जी ने बोध रात्रि के अवसर पर बताया कि आज भी पिण्डी पर चूहे चढ़ते हैं। घर में मृत्यु होती है। पर जैसे विचार मूलशंकर के मन में आए थे वैसा हमारे मन में नहीं आता। हम कोशिश नहीं करते। प्रश्न नहीं उठाते इसी कारण घानी के बैल की तरह हम एक ही जगह घूमते रहते हैं। हमें इस पर विचार करके अपने जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए।

देव मुनि जी ने बताया कि जैसा महर्षि का नाम था वैसा ही गुण था। मूलशंकर बचपन का नाम था। उन्होंने मूल को ढूँढा और शंकर को भी प्राप्त किया। बाद में उनका नाम दयानन्द सरस्वती रखा। दया भी उनके पास थी और आनन्द भी था। हमारे मन में कुछ दया तो होती

हैं पर हम आनन्द से वञ्चित हैं। हमें भी ऋषि की तरह अपने जीवन को सुधार कर आगे बढ़ाना चाहिए।

आचार्य कर्मवीर जी ने बताया कि जैसे महर्षि ने संसार के लोगों के उपकार लिए प्रचार प्रसार किया। उनके बाद उनके अनुयायियों ने भी बहुत ही प्रचार-प्रसार का कार्य किया। चाहे स्वामी श्रद्धानन्द जी हो पंडित लेखराम जी हो पंडित गुरुदत्त जी आदि हो। एक बार जब महर्षि दयानन्द जी वैदिक धर्म के प्रचार के लिए कश्मीर जाना चाहते हैं तब कश्मीर में वहां के डोगरा राजा रणवीर सिंह जी को वहां के पण्डितों ने बताया कि यहां एक नास्तिक आने वाला है और हाहाकार मच गया। राजा को अपने दबाव में रखकर महर्षि को कश्मीर आने से रोका गया। उसके बाद एक पादरी जानसन ने वहां के पंडितों को शास्त्रार्थ के लिए बुलाया। उस समय वहां के राजा प्रतापसिंह जी थे। पादरी ने कहा यदि मैं जीत गया तो सब प्रजा सहित आपको ईसाई धर्म स्वीकार कर लेना है और यदि मैं हार गया तो मैं हिन्दु बन जाऊंगा। इस शास्त्रार्थ की सूचना किसी तरह से पंडित गणपति शर्मा राजस्थान को मिली। वह चोरी-छिपे जाकर किसी तरह से वहां की सभा में बैठ गए। जब पौराणिक पंडित हारने लगे तब पंडित गणपति शर्मा ने पादरी को चुनौती दी। राजा प्रतापसिंह जी ने शास्त्रार्थ की अनुमति दी। पंडित गणपति शर्मा जीत गए। उसके बाद राजा ने पूछा कि आपको क्या चाहिए तो पंडित गणपति शर्मा ने वहां आर्यसमाज का प्रचार हो और आर्यसमाज की स्थापना हो यह कहा उसके बाद वहां आर्यसमाज की स्थापना हुजूरी बाग में हुई और आर्यसमाज का प्रचार भी हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का १४१ वां स्थापना दिवस २७ फरवरी २०२३ को बड़े ही धूमधाम से सायं ४-८ बजे तक ऋषि उद्यान अजमेर में मनाया गया। सभा के पूर्व प्रधान डॉ. वेदपाल जी की प्रेरणा से आरम्भ हुआ स्थापना

दिवस सतत आगे बढ़ता गया। व्याख्यान का मुख्य विषय वेद, स्व-संस्कृति व स्वदेश से प्रेरित प्रवचन था। मुख्य वक्ता डॉ. सुरेन्द्र जी व आचार्य ओम्प्रकाश जी रहे। इस कार्यक्रम में सभा के माननीय सदस्य गण सभा प्रधान श्री सत्यानन्द जी, सभा मंत्री मुनि सत्यजित् जी, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष जी नवाल, वरिष्ठ सदस्य गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति डॉ. सुरेन्द्र जी, नवनिर्वाचित सदस्य डॉ. योगानन्द जी शास्त्री, पूर्व मंत्री श्री ओम् मुनि जी, वरिष्ठ सदस्य श्री विरजानन्द जी दैवकरणि, डॉ. वेदप्रकाश जी विद्यार्थी, श्रीमती ज्योत्स्ना धर्मवीर जी, आचार्य ओम्प्रकाश जी उपस्थित रहे। आदर्श नगर आर्यसमाज के लोग अजमेर नगर आर्यसमाज के सदस्य व अजमेर निवासी आर्य महानुभाव माताएं बहनों ने सोत्साह उपस्थित होकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया। साथ ही ऋषि उद्यान गुरुकुल अजमेर के आचार्य श्री कर्मवीर जी सभी ब्रह्मचारी गण, आश्रम वासी सभा के कर्मचारी गण आदि की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के बाद यज्ञ व संध्या हुई पश्चात सभी का प्रीतिभोज भी हुआ।

कार्यक्रम का संचालन आचार्य श्री कर्मवीर जी ने किया। मुनि सत्यजित् जी ने उपस्थित सभा के अधिकारियों व सभी आर्य सज्जनों का सहृदय धन्यवाद ज्ञापित किया तथा आगे भी सभा को सहयोग करने का निवेदन भी आर्य सज्जनों से किया।

डॉ. सुरेन्द्र जी ने बताया कि महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के यथार्थ, अभूतपूर्व भाष्य किया महर्षि के पहले भी लोगों ने भाष्य किए थे लेकिन उनसे कुछ लोगों ने अर्थ का अनर्थ किया था कुछ ने अश्लील भाष्य किए थे। उन सब को हटा करके और सभी लोगों को वेद से जोड़ने का कार्य महर्षि ने किया। इसलिए उनको वेदों वाला ऋषि कहते हैं। महर्षि ने वेद को अपौरुषेय माना तथा सभी ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत वेद को कहा और सिद्ध करके बताया। वेद का ज्ञान प्राणी मात्र के लिए है तथा सभी के लिए वेद सुलभ करवाया। अभी भी कुछ

मत, सम्प्रदाय स्त्री, शूद्र और दलितों को वेद पढ़ने से वञ्चित करते हैं। वेद और वेदानुकूल ग्रन्थों को ऋषि ने प्रमाण माना। कोई भी शूद्र अपने श्रेष्ठ कर्मों से ब्राह्मण बन सकता है तथा कोई भी ब्राह्मण अपने कर्मों की हीनता से शूद्र बन सकता है। विदेशी राज्य का विद्रोह व विनाश और स्वदेशी राज्य का समर्थन सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द जी ने किया।

आर्यों की एकता के लिए एक भाषा, एक धर्म, एक धर्म ग्रन्थ, एक संस्कृति का मन्त्र दिया। एक धर्म के ना होने के कारण पाकिस्तान अलग बना। एक भाषा के ना होने के कारण पाकिस्तान और बांग्लादेश अलग हुए। एक भाषा होने के कारण जर्मनी पुनः एक देश बना।

आचार्य ओम्प्रकाश जी ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द जी से वेद, स्वदेश व संस्कृति का बीज मिला। पाश्चात्य विद्वानों की बैठक हुई और उसमें यह निर्णय हुआ कि हमें यह सिद्ध करना है कि आर्य लोग बाहर से आए और उस सिद्धान्त को मैकाले की शिक्षा पद्धति ने पढ़ाना शुरू किया आज भी इस बात को वाम सेफ आदि जैसे संगठन लोग प्रचार करते हैं। जबकि सृष्टि उत्पत्ति सर्वप्रथम तिब्बत में हुई और तिब्बत से आर्य लोग सीधा यहां भारतवर्ष में आए। महर्षि दयानन्द जी ने बहुत पहले ही

अपने देश की बनी वस्तुओं का प्रयोग करने का विचार दे चुके थे। महर्षि ने राजाओं को प्रेरित किया अंग्रेजों को भी इस बात का डर था कि महर्षि दयानन्द केवल धर्म का प्रचार नहीं करता अपितु यह हमारा राज भी खत्म कर सकता है। अनेक समाज सुधार हुए पर कुछ ने अपने अनुयायियों के लिए अलग-अलग नियम बना दिया पर महर्षि दयानन्द जी ने सभी को भी वेद से जोड़ा।

इस कार्यक्रम में भजन के क्रम में ब्रह्मचारी सुभाष जी ने “कण कण में जो रमा है हर दिल में है समायी उसकी उपासना ही कर्तव्य है बताया” यह भजन गाया दूसरा भजन आदर्श नगर आर्यसमाज की गीता आर्य जी ने “स्थापना दिवस है आज यह दिन, खुशियों वाला आया है। ओम् की कृपा से आज हमने खुशी का दिन मनाया है” यह भजन गाया

इस कार्यक्रम को परोपकारिणी सभा के यूट्यूब चैनल पर देख सकते हैं।

जन्मदिन- अजमेर निवासी श्री सत्यनारायण जी सोनी के पुत्र श्री आनन्द सोनी जी का जन्मदिवस सपरिवार प्रातःकाल यज्ञ करके जन्मदिवस के मन्त्रों से आहूति देकर मनाया गया। आचार्य कर्मवीर जी ने आशीर्वाद दिया।

आचार्य ज्ञानचन्द्र

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में कई वर्ष से संचालित आयुर्वेदिक चिकित्सालय का पुनः आरम्भ २६ अगस्त को किया गया है। यह चिकित्सालय सोमवार को छोड़ सप्ताह में ६ दिन मार्च से अक्टूबर सायं ५ से ७ बजे तक व नवंबर से फरवरी सायं ४ से ६ बजे तक दो घण्टे खुलेगा।

इसमें वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक की सेवा उपलब्ध है। चिकित्सा परामर्श व चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। यदि आप अपने धन को इस पुण्य कार्य में लगाना चाहते हैं, तो परोपकारिणी सभा के बैंक खाते में सहयोग भेज सकते हैं। सहयोग भेजकर ८८९०३१६९६१ पर सूचित अवश्य कर दें।

- मन्त्री

(परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित)
योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर
(स्वामी विष्वङ्गजी परिव्राजक के सान्निध्य में)

संवत् २०८०, आषाढ़ कृष्ण अष्टमी से अमावस्या तक, तदनुसार ११ से १८ जून २०२३

इस योग-साधना शिविर में योग सम्बन्धी विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक शिविरार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
३. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
४. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
५. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
६. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
७. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
८. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।
९. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ- परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) कार्यालय से (०१४५-२९४८६९८, मो. ९३१४३९४४२१) से सम्पर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार अतिरिक्त भुगतान से की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गम्भीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर

देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने-पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क २००० रु. मात्र जमा करना होगा। पृथक् कक्ष का शुल्क २००० रु. अतिरिक्त देय है। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारम्भ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है, क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबंधी महत्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२९४८६९८, मो.नं. ९३१४३९४४२१

- : मार्ग : -

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुँचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टैण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी जी का आह्वान

200वीं जयंती पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को जाने हिंदुस्तान

प्रधानमंत्री मोदी जी ने भारत के अतीत के बारे में लोगों में बेहतर जागरूकता पैदा करने के लिए आधुनिक भारतीय इतिहास पर शोध के दायरे को व्यापक बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही स्वामी दयानंद सरस्वती की आगामी 200वीं जयंती के अवसर पर प्रधानमंत्री ने शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थानों से उनके योगदानों के बारे में शोध करने का आह्वान किया। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन काम करने वाली संस्था नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय सोसायटी की वार्षिक आम बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने संबोधन में, प्रधानमंत्री ने व्यक्तियों, संस्थानों और विषयों दोनों के संदर्भ में आधुनिक भारतीय इतिहास पर शोध के दायरे को व्यापक बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि भारत के अतीत के बारे में लोगों में बेहतर जागरूकता पैदा की जा सके। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि निकट भविष्य में संग्रहालय भारत और दुनिया से दिल्ली आने वाले पर्यटकों के लिए एक मुख्य आकर्षण के रूप में उभरेगा। यह बताते हुए कि 1875 में आर्य समाज के संस्थापक और आधुनिक भारत के सबसे प्रभावशाली सामाजिक और सांस्कृतिक शिखिसयतों में से एक स्वामी दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती 2024 में आ रही है, श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के इस महान दूरदर्शी और समाज सुधारक के योगदान के साथ-साथ 2025 में अपने अस्तित्व के 150 साल पूरे करने जा रहे आर्य समाज के बारे में अच्छी तरह से शोध करके ज्ञान का सृजन करने के लिए देश भर के शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थानों का आह्वान किया। ज्ञात रहे पिछले दिनों महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200 वें जन्मोत्सव के विश्वव्यापी आयोजनों के निमित्त आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल की गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के नेतृत्व में देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी से भेंट की थी इस अवसर पर श्री सुरेशचंद्र आर्य जी, प्रकाश आर्य जी, श्री विनय आर्य जी एवं श्री राजेंद्र विद्यालंकार जी उपस्थित रहे थे।

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्य पर

पुस्तक का नाम	पृ. सं.	वास्तविक मूल्य रुपये	छूट के साथ मूल्य रुपये
ऋग्वेद संहिता	९००	५००	४००
अथर्ववेद संहिता	५५०	४००	३००
ऋग्वेद भाष्य नवम भाग	४००	३००	२२५
पञ्चमहायज्ञ विधि	६२	२०	१५
वैदिक संध्या मीमांसा	१०७	४०	३०
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	१३९२	८००	५००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	३३६	२००	१००
कुल्लियाते आर्यमुसाफिर (दोनों भाग)	९३८	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	८१४	५००	२५०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २१९७, चार भागों का मूल्य = १३००/-

डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = १०००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382



VEDIC PUSTKALAYA

0510800A0198064

1342679A

0510800A0198064.mab@pnb

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली
पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर

(VEDIC PUSTKALAYA,
AJMER)

बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक,
कचहरी रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-

0008000100067176

IFSC - PUNB0000800

UPI ID :

0510800A0198064.mab@pnb

विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सास, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्तें। यही कोष अक्षय है, इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाये, इस कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है। (सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास ३)

परोपकारी ग्राहकों हेतु आवश्यक सूचना

परोपकारी के अनेक सदस्यों की यह शिकायत रहती है कि उन्हें पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही है। रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका भेजने पर डाक व्यय बढ़ जाता है। सदस्यों से निवेदन है कि जो रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं, वह निम्नानुसार डाक व्यय सभा के खाते में अग्रिम रूप से जमा करके कार्यालय को सूचित कर दें। रजिस्टर्ड डाक का व्यय (पत्रिका शुल्क के अतिरिक्त) निम्न प्रकार है-

- | | |
|---|---------------------|
| १. प्रत्येक अंक (वर्ष भर २४ अंक) रजिस्टर्ड डाक से मंगाने पर | - डाक व्यय - १०००/- |
| २. एक मास के दो अंक- एक साथ मंगाने पर वार्षिक | - डाक व्यय - ५००/- |
| ३. एक वर्ष के २४ अंक- एक साथ मंगाने पर | - डाक व्यय - १००/- |

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-10158172715 IFSC-SBIN0031588

email : psabhaa@gmail.com

सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961

गुरुकुल प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषिउद्यान, अजमेर में संस्कृत भाषा, पाणिनीय व्याकरण, वैदिक दर्शन, उपनिषदादि के अध्ययन हेतु प्रवेश आरम्भ किये गए हैं। इन्हें पढ़कर वैदिक विद्वान्, उपदेशक, प्रचारक बन सकते हैं। कम से कम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण १६ वर्ष से बड़े युवकों को प्रवेश मिल सकता है। प्रवेशार्थी को पहले ३ माह का अस्थाई प्रवेश दिया जाएगा। इस काल में अध्ययन व अनुशासन में सन्तोषजनक स्थिति वाले युवकों को ही स्थाई प्रवेश दिया जाएगा। सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है। गुरुकुल में अध्ययन के काल में किसी भी बाहर की परीक्षा को नहीं दिलवाया जाएगा, न उसकी अनुमति रहेगी। प्रवेश व अधिक जानकारी के लिए-

चलभाष : ७०१४४४७०४० पर सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क समय- अपराह्न ३.३० से ४.३०।

शुल्क वृद्धि की सूचना

परोपकारी के पाठकों बड़े भारी मन से सूचित करना पड़ रहा है कि कागज के मूल्य और छपाई के अन्य साधनों के मूल्यों में बेतहाशा वृद्धि के कारण जनवरी 2023 से सदस्यता शुल्क बढ़ाना पड़ रहा है। बढी हुई दरें इस प्रकार से हैं -

भारत में

एक वर्ष	-	400/-	पांच वर्ष -	1500/-
आजीवन (20 वर्ष)-		6000/-	एक प्रति -	20/-

परोपकारी

चैत्र कृष्ण २०७९ मार्च (द्वितीय) २०२३

३१

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है- अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा दें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। राशि जमा करने के पश्चात् दूरभाष द्वारा कार्यालय को अवश्य सूचित करें। दूरभाष - 8890316961

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-भारतीय स्टेट बैंक, डिगगी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-10158172715

IFSC-SBIN0031588

email : psabhaa@gmail.com

सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ फरवरी २०२३ तक)

१. श्री राजपाल सहगल व श्रीमती कमलकान्त सहगल, पंचकुला २. श्रीमती तारामणि आर्या, बैंगलुरु ३. मै. शुभश्री चेरिटेबिल ट्रस्ट, कोलकाता ४. डॉ. प्रतीक पांचाल, रोहतक ५. श्री विशोका मुनि, सरदारशहर ६. श्री आकाश व मानित, दिल्ली ७. श्री सुनील, सोनीपत ८. श्री आकाश, कोन्डा ९. श्री राजनरेन्द्र, पुणे १०. श्री आदित्य मुनि व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर ११. श्री विजय भारती कपूर, भीलवाड़ा १२. श्री कौशल गुप्ता, गाजियाबाद १३. श्री ओम्प्रकाश खेरा, दिल्ली १४. श्री नन्दकिशोर खेरा, दिल्ली १५. श्री श्यामबाबू, गाजियाबाद १६. श्री नरेश कुमार, करनाल १७. श्री बी.एम. महेत्रे, हैदराबाद।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गोशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गो-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गोशाला के दानदाता

(०१ से १५ फरवरी २०२३ तक)

१. श्री कृष्ण कुमार साहू, विलासपुर २. श्रीमती कोशलया देवी, अजमेर ३. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर ४. श्री विशिको मुनि, सरदारशहर ५. श्री सुधीर कुमार मिश्रा, अजमेर ६. श्री नोपाराम आर्य, नागौर ७. श्री आदित्य मुनि व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर ८. श्री लक्ष्मी देवी शर्मा, विलासपुर।

अन्य प्रकल्पों हेतु सहयोग राशि

१. श्रीमती तुलिका साहू, विलासपुर २. श्री जे.पी. चतरथ, करनाल ३. श्री देवमुनि, अजमेर ४. श्री विशोका मुनि, सरदारशहर ५. श्री मुनि सत्यव्रत, अजमेर ६. श्री महावीरप्रसाद, श्योपुर ७. कै. दुर्गाप्रसाद चौधरी, अजमेर ८. श्री महेन्द्रसिंह रावत, अजमेर ९. श्री राकेश गर्ग, अजमेर १०. श्री मनीष माहेश्वरी, अजमेर ११. श्रीमती कौशल गुप्ता, गाजियाबाद १२. श्री सुबोध मुनि व श्री चन्द्रसेन हरिसिंघानी, अहमदाबाद १३. श्री श्यामबाबू व श्रीमती उषा आर्या, गाजियाबाद १४. श्री सुशील कुमार मरेजा, गुरुग्राम।

आभूषण

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चाँदी, माणिक, मोती, मूंगा आदि रत्नादि से युक्त आभूषणों के धारण कराने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं होता क्योंकि आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है।

सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लस

‘सत्यार्थ प्रकाश’ एवं ‘महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र’ प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ ‘सत्यार्थप्रकाश’ ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति ‘वैचारिक क्रान्ति’ को जन्म दिया। अतः परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व ‘विश्व पुस्तक मेला’ दिल्ली में प्रतिवर्ष ‘सत्यार्थप्रकाश’ के साथ ‘महर्षि का जीवन-चरित्र’ एवं ‘आर्याभिविनय’ पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। ५०० से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ ‘सत्यार्थप्रकाश वितरण’ अवश्य लिख दें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, बैंक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनीऑर्डर भी कर सकते हैं।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज दें। धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर



WORLD OF SBI SBI Payments

MERCHANT NAME : PROPKARNI SABHA
UPI ID : PROPKARNI@SBI

SCAN & PAY

BHIM
SBI Pay
BHIM UPI

सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम
परोपकारिणी सभा, अजमेर
(PAROPKARINI SABHA AJMER)

बैंक का नाम
भारतीय स्टेट बैंक, डिगगी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-
10158172715
IFSC - SBIN0031588

UPI ID : PROPKARNI@SBI

विश्व पुस्तक मेले (२५ फरवरी से ५ मार्च) के अवसर पर वैदिक पुस्तकालय की स्टॉल पर परोपकारिणी सभा के पदाधिकारी, सदस्यगण एवं कार्यकर्त्तागण



आर.जे.ए.जे./80/2021-2023 तक

प्रेषण : १५-१६ मार्च २०२३

आर.एन.आई. ३१५९/५९

अनन्य ईश्वर भक्त, योगेश्वर
महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

की
२०० वीं जयन्ती के अवसर पर

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित

दिव्य एवं भव्य
अन्तर्राष्ट्रीय ऋषि मेला

१७-२० अक्टूबर २०२४

सादर आमन्त्रण

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

आर.जे.ए.जे.